بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly Badar Qadian HINDI

अल्लाह तआला का आदेश

اُتۡلُ مَاۤ اُوۡحِیَ اِلَیۡکَ مِنَ الۡکِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوۃَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوۃَ تَنۡہٰی عَنِ الۡفَحۡشَآءِ وَالۡمُنۡکَرِ ؕ وَلَذِکۡرُ اللّٰہِ اَکۡبَرُ ؕ وَاللّٰہُ یَعۡلَمُ مَا تَصۡنَعُوۡنَ ﴿۴۶﴾

(العنکبوت:46)

अनुवाद : पढ़कर सुना जो किताब में से तेरी ओर वह वह्यी की जाती है और नमाज़ कायम कर। निस्संदेह नमाज़ अश्लीलता और हर बुरी बात से रोकती है। और निश्चित रूप से अल्लाह का ज़िक्र सबसे बड़ा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद | वर्ष- 11 | अंक -42 | 03 जमादिउल अव्वल 1448 हिज्री कमरी, 15 ईखा 1405 हिज्री शम्सी, 15 अक्टूबर 2026 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

रोज़ाना पाँच नमाज़ें अदा करने से अल्लाह तआला गुनाहों को मिटा देता है

عَنۡ أَبِي هُرَيۡرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: "أَرَأَيۡتُمۡ لَوۡ أَنَّ نَهَرًا بِبَابِ أَحَدِكُمۡ يَغۡتَسِلُ فِيهِ كُلَّ يَوۡمٍ خَمۡسًا مَا تَقُولُ ذٰلِكَ يُبۡقِي مِنۡ دَرَنِهِ قَالُوا: لَا يُبۡقِي مِنۡ دَرَنِهِ شَيۡئًا. قَالَ: فَذٰلِكَ مِثۡلُ الصَّلَوَاتِ الۡخَمۡسِ، يَمۡحُو اللّٰهُ بِهِ الۡخَطَايَا". (صحيح البخاری، كتاب مواقيت الصلوٰة، باب الصلوٰة الخمس كفارة للخطايا)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना: ज़रा बताओ तो सही कि अगर तुममें से किसी के दरवाज़े पर पानी की नहर बहती हो और वह हर रोज़ पाँच बार उसमें नहाए, तो क्या तुम समझते हो कि उसके पाँच बार नहाने के बावजूद उसके शरीर पर कुछ मैल रह जाएगा? लोगों ने कहा: नहीं, ज़रा भी मैल नहीं रहेगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: बस, यही पाँचों नमाज़ों की मिसाल है। अल्लाह तआला इनके ज़रिए गुनाहों को मिटा देता है।



हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

नमाज़ वास्तव में रब्बुल इज़्ज़त से दुआ है, जिसके बिना इंसान ज़िंदा नहीं रह सकता

नमाज़ क्या चीज़ है? नमाज़ वास्तव में रब्बुल इज़्ज़त से दुआ है, जिसके बिना इंसान ज़िंदा नहीं रह सकता और न ही उसे आराम और खुशी के साधन मिल सकते हैं। जब खुदा तआला उस पर अपना फ़ज़ल करेगा, तब उसे वास्तविक खुशी और सुकून मिलेगा। उसी समय से उसे नमाज़ों में आनंद और रुचि आने लगेगी। जिस तरह स्वादिष्ट भोजन खाने से मज़ा आता है, उसी तरह फिर रोने और गिड़गिड़ाने में भी आनंद आएगा और नमाज़ की यह अवस्था पैदा हो जाएगी। इससे पहले, जिस तरह इंसान सेहत हासिल करने के लिए कड़वी दवा खाता है, उसी तरह नमाज़ में आनंद न आने के बावजूद नमाज़ पढ़ना और दुआएँ माँगना ज़रूरी है।

नमाज़ में आनंद न आने की इस अवस्था में यह मानकर कि इससे आनंद और रुचि पैदा होगी, यह दुआ करे कि:

हे अल्लाह! तू देखता है कि मैं कितना अंधा और नासमझ हूँ और इस समय मेरी हालत बिल्कुल मुर्दे जैसी है। मैं जानता हूँ कि थोड़ी देर बाद जब मुझे आवाज़ दी जाएगी, तो मैं तेरी ओर आ जाऊँगा। उस समय मुझे कोई रोक नहीं सकेगा, लेकिन मेरा दिल अंधा है और तुझे पहचानता नहीं। तू उस पर ऐसा प्रकाश का शोला उतार कि उसमें तेरा प्रेम और शौक पैदा हो जाए। तू ऐसा फ़ज़ल कर कि मैं अंधा न उठूँ और अंधों में शामिल न हो जाऊँ।

जब वह इस तरह की दुआ माँगेगा और लगातार ऐसा करता रहेगा, तो वह देखेगा कि एक समय ऐसा आएगा जब इसी नमाज़ में, जिसमें पहले आनंद नहीं आता था, आसमान से एक ऐसी चीज़ उस पर उतरेगी जो उसके दिल में कोमलता और भावुकता पैदा कर देगी। (मलफ़ूज़ात, जिल्द 3, पृष्ठ 481, संस्करण 2022 ई.)



नमाज़ में लगने वाला समय अश्लीलता और बुरे कामों से बचाता है

हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह अल-अनकबूत की आयत 46 की तफ़सीर में बयान फ़रमाते हैं:

निस्संदेह नमाज़ बुरी और नापसंद बातों से रोकती है। इन बुरी बातों में वे भी शामिल हैं, जिनका संबंध इंसान की अपनी ज़ात से होता है और वे भी, जो समाज के लिए परेशानी का कारण बनती हैं। क्योंकि मुसलमानों के लिए जमाअत के साथ पाँचों समय नमाज़ पढ़ना निश्चित है। यदि उनके बीच जमाअत के साथ नमाज़ कायम हो जाएगी, तो उनका बहुत-सा समय खुदा तआला की इबादत में लग जाएगा। और नमाज़ में लगने वाला समय उन्हें अश्लीलता और बुरे कामों से बचाता रहेगा।

इसी तरह जब नमाज़ में दुआएँ की जाती रहेंगी, अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी, तो वे दुआएँ खुदा तआला का फ़ज़ल खींचकर उनकी अपनी सुधार का भी कारण बनेंगी और दूसरों के सुधार और तरक्की का भी कारण बन जाएँगी। इसी तरह नमाज़ में क़ुरआन करीम की जो आयतें पढ़ी जाती हैं और अल्लाह की पवित्रता और प्रशंसा का बार-बार वर्णन किया जाता है, उसका दिल पर ऐसा असर होता है कि इंसान गुनाहों से नफ़रत करने लगता है।

संक्षेप में, "जो किताब तेरी ओर वह्यी की जाती है, उसे पढ़कर सुना" के तुरंत बाद "नमाज़ कायम कर" और "निस्संदेह नमाज़ बुरी और नापसंद बातों से रोकती है" का उल्लेख करके इस ओर संकेत फ़रमाया कि दुआओं के बिना पवित्रता हासिल नहीं हो सकती। क़ुरआन की तिलावत से तुम दुनिया के विचारों को बेशक बदल सकते हो, लेकिन दुनिया में पवित्रता खुदा तआला के फ़ज़ल के बिना हासिल नहीं हो सकती और यह फ़ज़ल दुआओं से ही प्राप्त होगा। इसलिए नमाज़ें पढ़ो और दुआएँ माँगो, ताकि खुदा तआला ने जिस उद्देश्य के लिए तुम्हें खड़ा किया है, उसमें तुम्हें सफलता प्राप्त हो।

(तफ़सीर-ए-कबीर, जिल्द 10, पृष्ठ 412)

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का जलसा सालाना ब्रिटेन 2026 के समापन भाषण का सारांश

तशह्हुद, तअव्वुज़ और सूरह फ़ातिहा की तिलावत के बाद फ़रमाया:

अल्लाह तआला ने हम पर एहसान करते हुए हमें इस ज़माने में पैदा किया है, जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम मसीह और महदी को इस्लाम की शिक्षा दुनिया में फैलाने के लिए भेजा गया। आने वाले इस मसीह और महदी ने अपनी पूरी कोशिश से एक ऐसी जमाअत तैयार करनी थी, जिसका हर सदस्य पूर्ण रूप से एक ख़ुदा को मानने वाला हो और शिर्क को समाप्त करने के लिए न केवल अपनी ज़ात में कोशिश करे, बल्कि दुनिया को भी एक ख़ुदा के झंडे तले लाने के लिए प्रयास करता रहे।

इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस उद्देश्य के लिए एक पाक जमाअत की स्थापना फ़रमाई और दस शर्तों पर अपने मानने वालों से बैअत ली। बैअत के यही शब्द हम जमाअत में शामिल होते समय दोहराते हैं।

आप अलैहिस्सलाम ने जिन बातों पर बैअत ली, वे ये थीं कि जब तक मैं क़ब्र में दाख़िल न हो जाऊँ, शिर्क के निकट भी नहीं जाऊँगा। झूठ, ज़िना, बुरी नज़र, बुरे कामों, ज़ुल्म, ख़ियानत, फ़साद और बग़ावत से बचूँगा। नफ़्सानी जोश के समय उनके वश में नहीं आऊँगा। रूहानियत में तरक़्क़ी के लिए पाँचों वक़्त की नमाज़ों का पाबंद रहने के साथ-साथ तहज्जुद की नमाज़ भी अदा करने की कोशिश करूँगा। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भी भेजूँगा और रोज़ाना अपने गुनाहों की माफ़ी भी माँगूँगा। अल्लाह तआला के एहसानों को याद रखूँगा और उसकी हम्द करता रहूँगा। अल्लाह तआला की मख़लूक़ को आम तौर पर और मुसलमानों को ख़ास तौर पर अपने नफ़्सानी जोश के कारण किसी भी तरह की तकलीफ़ नहीं पहुँचाऊँगा। बुरी रस्मों और नफ़्स की इच्छाओं से बचूँगा। तकब्बुर से बचूँगा और आजिज़ी, अच्छे अख़लाक़, नरमी और विनम्रता अपनाऊँगा। दीन की इज़्ज़त और इस्लाम से हमदर्दी को अपनी जान, माल, इज़्ज़त और अपनी औलाद से भी अधिक प्रिय समझूँगा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो भी फ़ैसला फ़रमाएँगे, उसे दिल से स्वीकार करूँगा।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि यहाँ ख़िलाफ़त की भी पूर्ण आज्ञाकारिता शामिल है, क्योंकि ख़िलाफ़त भी अल्लाह तआला के वादों के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कामों को ही आगे बढ़ाने के लिए है।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने फ़रमाया कि यह विषय मैं पहले भी बयान कर चुका हूँ और इस पर आधारित बातें किताब की शक्ल में प्रकाशित भी हो चुकी हैं, लेकिन इस विषय की अहमियत को देखते हुए आज मैं फिर इस बारे में कुछ बयान करूँगा।

बैअत की पहली शर्त में शिर्क से बचने का ज़िक्र है। इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इंसान के पैदा होने का असल उद्देश्य यही है कि वह ख़ुदा के लिए हो जाए। गुनाह बहुत हैं और उनकी कई शाखाएँ हैं, लेकिन सबसे बड़ा गुनाह शिर्क है। बदक़िस्मत इंसान जितना अधिक इसमें पड़ता जाता है, उतना ही अपने असल उद्देश्य से दूर होता जाता है। यहाँ तक कि गिरते-गिरते एक बहुत नीची जगह पर जा पहुँचता है, जो मुसीबतों, मुश्किलों और हर तरह के दुखों का घर है, जिसे जहन्नम भी कहते हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी जब बैअत लिया करते थे, तो शिर्क से पूरी तरह बचने की बैअत लेते थे। इसलिए हमें हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि हम कभी ऐसा कोई काम न करें, जो हमें अपनी बैअत के वचन से दूर करने वाला हो।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हर प्रकार के शिर्क से बचना चाहिए। न सूरज, न चाँद, न आसमान के सितारे, न हवा, न आग, न पानी और न ही ज़मीन की कोई दूसरी चीज़ पूजने योग्य समझी जाए। दुनिया के साधनों को भी इतनी इज़्ज़त न दी जाए और उन पर ऐसा भरोसा न किया जाए, मानो वे ख़ुदा के साझीदार हों। इसी तरह अपनी हिम्मत और कोशिश को भी सब कुछ नहीं समझना चाहिए, क्योंकि यह भी शिर्क की एक क़िस्म है।

शिर्क का खंडन करने के बारे में सूरह इख़लास का ज़िक्र करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह छोटी-सी सूरत है, लेकिन इसने बहुत ख़ूबसूरती से इंसान को हर प्रकार के शिर्क से दूर कर दिया है और अल्लाह तआला की पाक हस्ती को हर ऐब से पाक बताया है।

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बेटे हज़रत इब्राहीम की वफ़ात हुई, तो सूरज को ग्रहण लग गया। लोगों ने कहा कि हज़रत इब्राहीम की वफ़ात के कारण ग्रहण लगा है, लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि निस्संदेह सूरज और चाँद अल्लाह तआला की निशानियों में से हैं। ये दोनों किसी की ज़िंदगी या मौत के कारण ग्रहणग्रस्त नहीं होते।

एक जगह आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि शिर्क की तीन क़िस्में हैं। पहली क़िस्म यह है कि आम तौर पर बुतों की पूजा की जाए। दूसरी क़िस्म यह है कि दुनिया के साधनों पर ज़रूरत से ज़्यादा भरोसा किया जाए। शिर्क की तीसरी क़िस्म यह है कि ख़ुदा तआला के अस्तित्व के सामने अपने अस्तित्व को भी कोई चीज़ समझा जाए।

भौतिक तरक़्क़ी के इस ज़माने में साधनों को ख़ुदा का साझीदार ठहराने का शिर्क बहुत बढ़ गया है। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह' तौहीद का कलिमा है। इसका अर्थ है कि ख़ुदा तआला के सिवा कोई भी इबादत और सच्ची आज्ञाकारिता के योग्य नहीं है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा से हिदायतें प्राप्त करके उसकी मख़लूक़ तक पहुँचाने वाले हैं और जो कुछ ख़ुदा की ओर से आता है, वह इसी रास्ते से आता है।

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हमें हमेशा यह कोशिश करनी चाहिए कि हर काम करते हुए और हर शब्द बोलते हुए हमारे मन में यह ध्यान रहे कि कहीं यह शब्द हमें ख़ुदा से दूर और शैतान के निकट ले जाने वाला तो नहीं है।

अल्लाह तआला का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा है कि वह आपको फ़तहें देगा और ज़रूर देगा। लेकिन हमें भी चाहिए कि अगर हम इन फ़तहों का हिस्सा बनना चाहते हैं, तो पूरी निष्ठा के साथ अल्लाह तआला की तौहीद का ऐलान करने वाले बनें।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया:

"ऐ अहमदी क़ौम! ख़ुदा हमारा रिश्तेदार नहीं है। शिर्क से बचो और इबादत करो, ताकि ख़ुदा तुम्हारा निगहबान हो जाए। देखो! ख़ुदा ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के बेटे तक की परवाह नहीं की। बल्कि ऐसा काम करो कि अहमदी कहलाने के योग्य साबित हो जाओ।"

हज़रत लुक़मान अलैहिस्सलाम ने भी अपने बेटे को छिपे हुए शिर्क से बचने की नसीहत फ़रमाई। हज़ूर अनवर ने मुसलमानों की अमली हालत का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि वे 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का कलिमा तो पढ़ते हैं, लेकिन शिर्क की विभिन्न क़िस्मों में फँसे हुए हैं।

शिर्क की एक क़िस्म झूठ का इस्तेमाल करना है। आज लोग समझते हैं कि झूठ के बिना गुज़ारा नहीं हो सकता। हज़ूर अनवर ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के डाकख़ाने वाले मुक़द्दमे का हवाला देते हुए बताया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया है कि लोग समझते हैं कि सच बोलकर बचना मुमकिन नहीं, लेकिन मैंने सच बोला और ख़ुदा ने मुझे बचा लिया।

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आजकल बहुत-से ऐसे मामले सामने आते हैं, जिनमें झूठ बोला गया होता है। हमें इससे बचना होगा। अगर देखा जाए, तो झूठ इंसान की प्रकृति के ख़िलाफ़ है। लेकिन आजकल दुनिया के राजनीतिक हालात बता रहे हैं कि किस-किस तरह झूठ बोला जाता है। कई देश इकट्ठे होकर दूसरे देश के ख़िलाफ़ झूठ पर आधारित बातें बनाकर हमला करते हैं। इसलिए अगर आज हमें अपनी बैअत का हक़ अदा करना है और दुनिया में बदलाव लाना है, तो अहमदियों की ज़िम्मेदारी है कि वे झूठ के ख़िलाफ़ जिहाद करें।

फिर एक बुराई बुरी नज़र है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अगर तुमने मेरी बैअत की है, तो किसी को ग़लत नज़र से न

देखो और बुरी नज़र से बचो। क़ुरआन करीम ईसाइयों की शिक्षा की तरह केवल यह नहीं कहता कि औरत को बुरी नज़र से न देखो, बल्कि क़ुरआन करीम यह कहता है कि न तो शहवत की नज़र से और न ही बिना शहवत के किसी ग़ैर औरत के चेहरे की ओर देखो। इसी तरह उनकी ऐसी बातें भी न सुनो, जिनमें नरमी के नाम पर ऐसी बातें कही जाएँ, जो विचारों को ग़लत दिशा में ले जाने वाली हों। तभी तुम ठोकर खाने से बच सकोगे।

हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि आजकल के समाज में यही बुराइयाँ हैं, जिनके कारण बहुत-से लोग बुराइयों में पड़ जाते हैं और घर भी टूटते हैं। आजकल तो विकसित देशों में पढ़ी-लिखी औरतों में भी यह जागरूकता पैदा हो गई है और वे भी आवाज़ उठा रही हैं कि हमारी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त के लिए कोई क़ानून बनाया जाना चाहिए। इसलिए अहमदियों का फ़र्ज़ है कि वे इन बुराइयों के ख़िलाफ़ जिहाद करें।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि पाकदामन रहने के लिए पाँच बातें हैं।

पहली: अपनी आँखों को ग़ैर-महरम पर नज़र डालने से बचाओ।

दूसरी: अपने कानों को ग़ैर-महरमों की आवाज़ सुनने से बचाओ। ग़ैर-महरमों के क़िस्से न सुनो।

तीसरी: ऐसी सभी सभाओं और मौक़ों से अपने आपको बचाओ, जहाँ बुरे काम पैदा होने का अंदेशा हो।

पाँचवीं बात नौजवानों के लिए यह है कि अगर निकाह और शादी में कोई मुश्किल हो, तो रोज़ा रखो।

फिर एक बुराई फ़साद और बुरे कामों में पड़ना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जहाँ तुम ऐसी सभाएँ देखो, जहाँ बुरे काम हो रहे हों, वहाँ से उठकर चले जाया करो।

सरकार के ख़िलाफ़ बग़ावत करने से भी आप अलैहिस्सलाम ने मना फ़रमाया।

आप अलैहिस्सलाम ने ज़ुल्म से बचने की नसीहत भी फ़रमाई।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा तहज्जुद और नफ़्ल नमाज़ों की ओर भी ध्यान दिलाया है।

हदीस में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा बंदा नफ़्ल इबादतों के ज़रिए मेरे क़रीब होता जाता है, यहाँ तक कि मैं उससे मुहब्बत करने लगता हूँ।

इसी तरह आप अलैहिस्सलाम ने तस्बीह और हम्द करने की भी नसीहत फ़रमाई है।

हदीस में आता है कि हर महत्वपूर्ण काम, जिसे अल्लाह तआला की हम्द के बिना शुरू किया जाए, वह बेबरकत होता है।

इसी तरह शुक्र अदा करने की ओर भी बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है।

दुरूद शरीफ़ को अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बना लें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति एक बार मुझ पर दुरूद भेजता है, अल्लाह उस पर दस बार रहमत भेजता है।

इसी तरह तौबा और इस्तिग़फ़ार की ओर भी बहुत ध्यान देने की ज़रूरत है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि जो व्यक्ति तौबा और इस्तिग़फ़ार को अपना नियम बना लेगा, अल्लाह उसके लिए हर तंगी से निकलने का रास्ता बना देगा, हर ग़म से उसे राहत देगा और उसे ऐसी जगह से रोज़ी देगा, जहाँ से उसे गुमान भी नहीं होगा।

अल्लाह की मख़लूक़ के साथ अच्छा व्यवहार करना भी ज़रूरी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि देखो! वह जमाअत, जमाअत नहीं हो सकती, जो एक-दूसरे को खाती हो और जब चार लोग इकट्ठे बैठें, तो अपने ग़रीब भाई की बुराई करें, उसमें ऐब निकालें और कमज़ोरों तथा ग़रीबों को तुच्छ समझते हुए उनसे नफ़रत करें।

हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने फ़रमाया कि ये कुछ बातें हैं, जो मैंने बयान की हैं।

अगर हम अपने अंदर पाक बदलाव पैदा करते हुए और बैअत का हक़ अदा करते हुए बैअत की इन शर्तों पर पूरी तरह अमल करें, तो हम न केवल अपने अंदर एक पाक समाज बनाने वाले होंगे, बल्कि इस्लाम का सच्चा संदेश दुनिया में फैलाने वाले भी बनेंगे। हम मुसलमानों और ग़ैर-मुसलमानों, बल्कि ख़ुदा के अस्तित्व को न मानने वालों और इस्लाम के विरोधियों तक भी ऐसी शिक्षा पहुँचाने वाले होंगे, जो एक दिन उन्हें सोचने पर मजबूर कर देगी कि अहमदी ही वे लोग हैं, जो दुनिया में ख़ुदा की हुकूमत क़ायम करने के साथ-साथ ऊँचे नैतिक गुण भी पैदा करना चाहते हैं।

आजकल दज्जाली ताक़तें अपनी पूरी कोशिश कर रही हैं कि दुनिया से ख़ुदा का नाम मिटा दिया जाए और दुनिया में फ़साद पैदा किया जाए। ऐसे समय में हमारी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि हम बैअत का हक़ अदा करते हुए, जिहाद करते हुए, ख़ुदा से उसका फ़ज़ल माँगते हुए और उनकी दज्जाली चालों को नाकाम बनाते हुए अपनी पूरी कोशिश करें।

अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दुआओं में सारी दुनिया के अमन और सलामती तथा मुसलमानों के अस्तित्व और सलामती के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला करे कि हर अहमदी दुनिया में एक ख़ुदा की हुकूमत क़ायम करने और अमन व सलामती फैलाने में अपना किरदार अदा करने वाला बन जाए।

इसके बाद हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने दुआ करवाई।

आख़िर में हज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि इस समय उपस्थिति की जो रिपोर्ट है, उसके अनुसार अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 51,181 लोग जलसे में उपस्थित होकर जलसा सुन रहे हैं।

जलसे में 117 देशों की भागीदारी है।

★ ★ ★

प्रिय पाठकगण अवश्य ध्यान दें

अखबार बदर की सहायता

अखबार बदर को यह सम्मान प्राप्त है कि यह अखबार पूर्ण रूप से इस युग के मामूर, हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे सेवक, हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बरकत वाली सहायता में पनपा। शुरुआत से आज तक, पहले नबुव्वत और बाद में खिलाफत अला मिन्हाजे नबुव्वत के संरक्षण में यह अखबार प्रचार और प्रशिक्षण के कर्तव्यों को पूरा करता चला आ रहा है। कई नेक लोगों ने इस अखबार के माध्यम से अहमदियत को स्वीकार किया। इस अखबार के माध्यम से खिलाफत-ए-अहमदिया के निर्देशों की रोशनी में अहमदी घरों का प्रशिक्षण हो रहा है और आगे भी इंशाअल्लाह होता चला जाएगा।

अखबार की तैयारी, प्रकाशन, पैकिंग और भेजने में बहुत अधिक खर्च होते हैं। केवल मामूली सदस्यता शुल्क से इन खर्चों को पूरा करना संभव नहीं है। इसके लिए खास सहायकों की बहुत आवश्यकता है, जो इस युग के मामूर के इस अखबार के खर्चों को उठाने वाले हों।

इस अखबार की सहायता करने वालों को अल्लाह कभी व्यर्थ नहीं जाने देगा, क्योंकि अल्लाह का वादा है कि:

إِنِّي مُعِينٌ مَنْ أَرَادَ إِعَانَتَكَ

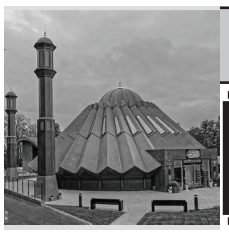
(अर्थात् मैं उसकी सहायता करूँगा जो तुम्हारी सहायता करेंगे।)

सहायता करने वालों के सभी मामलों का अल्लाह स्वयं संरक्षक हो जाएगा और अपने वादे के अनुसार उनके कारोबार, नौकरी, बाग, फसल और धन में कई गुना वृद्धि करेगा। इंशाअल्लाह।

किसी भी प्रकार के मार्गदर्शन के लिए कार्यालय मैनेजर, साप्ताहिक अखबार बदर से संपर्क करें।

संपर्क नंबर: 98156-39670

★ ★ ★



ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 21 अगस्त 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेमिसाल उदारता और दानशीलता

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने सहाबा को शुक्रगुज़ारी की ओर इस गहराई से ध्यान दिलाया करते थे कि इस बारे में हज़रत पीर सिराजुल हक़ नोमानी रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर उनसे फ़रमाया कि "आज तुम्हारा और मियाँ बख़्श सौदाई का क्या झगड़ा हो रहा था?" वहाँ एक मज़्ज़ूब जैसा आदमी था। पीर साहब ने उससे कोई बहस की होगी। वे कहते हैं, "मैं डर गया कि ख़ुदा जाने हज़रत अक़दस क्या फ़रमाएँगे। उन्होंने हमारी सारी बातें सुनी होंगी। मैंने डरते-डरते सारा हाल सुनाया। आपने फ़रमाया कि ये सौदाई पागल लोग मर्फ़ूउल-क़लम होते हैं।" यानी ऐसा आदमी जिसकी सोचने-समझने की शक्ति नहीं होती और जिसके अच्छे-बुरे काम शरीअत के अनुसार लिखे नहीं जाते और उसके गुनाह पर भी कोई पकड़ नहीं होती।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि ऐसे लोग "इस हालत में जो कुछ कहें या करें, उनकी कोई पकड़ नहीं होती।" उनके पास सोचने-समझने की शक्ति ही नहीं होती, इसलिए उनकी पकड़ क्या होगी? पकड़ तो उसकी होती है जिसमें कुछ अक़्ल हो। आपने फ़रमाया कि "ऐसे लोगों को दुनिया मज़्ज़ूब, वलीउल्लाह, क़ुतुब और साहिबे-ख़िदमत कहा करती है।" लेकिन दुनिया का ऐसा कहना ग़लत है। "असल में ये लोग मज़्ज़ूब और वलीउल्लाह नहीं होते, बल्कि महरूम होते हैं, यानी अल्लाह तआला की तमाम नेमतों से महरूम रहते हैं। इस तरह वे अक़्ल, दिमाग़, कपड़े, खाने-पीने के मज़े, बीवी-बच्चों और उनकी परवरिश की नेमतों तथा सवाब से महरूम होते हैं। अल्लाह तआला की पहचान और मारिफ़त से महरूम होते हैं। अल्लाह तआला की ज़ात और सिफ़ात के ज्ञान से महरूम होते हैं। रसूल और नबी की पहचान, उनकी पैरवी और अनुसरण से महरूम होते हैं। क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत, उसके अर्थ, रहस्यों, ज्ञान और बारीकियों से महरूम होते हैं। शरीअत और तरीक़त से महरूम होते हैं। फिर नमाज़, जो मोमिनों की मेराज है, रोज़ा, जिसका बदला ख़ास तौर पर अल्लाह तआला ही देता है, हज के तरीक़ों, ज़कात तथा इनके सवाब और दर्जों से भी महरूम होते हैं। तुम्हें ऐसे लोगों को देखकर उनसे बहस करने और लड़ने के बजाय अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने तुम्हें तमाम नेमतों और फ़ैज़ों से लाभ उठाने का अवसर दिया है और महरूम नहीं रखा। तुम्हें अक़्ल दी, दिमाग़ दिया, क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत और उसके ज्ञान, रहस्यों, मारिफ़त और बारीकियों से लाभ उठाने वाला बनाया। हर चीज़ के हलाल और हराम में फ़र्क़ करने की समझ दी। रसूलों की पहचान की तौफ़ीक़ दी और अपनी ज़ात तथा सिफ़ात का ज्ञान दिया।"

(तज़करतुल महदी, लेखक पीर सिराजुल हक़ नोमानी रज़ियल्लाहु अन्हु, भाग प्रथम, पृष्ठ 182-183)

इस प्रकार आपने अलैहिस्सलाम ने जहाँ मर्फ़ूउल-क़लम लोगों से बहस न करने, बल्कि उनके साथ अच्छा व्यवहार करने की शिक्षा दी, वहीं अल्लाह तआला की दी हुई नेमतों पर शुक्रगुज़ारी की शिक्षा भी दी कि हमें ऐसे लोगों को देखकर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने हमें सभी नेमतें प्रदान की हैं।

इसी तरह हज़रत मलिक हसन मुहम्मद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि "हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़ज्र की नमाज़ के लिए तशरीफ़ लाए। नमाज़ के बाद आपने ख़ुद्दाम से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि रात को सारंगियाँ और तंबूरे कहाँ बजते रहे हैं?" यानी आसपास कहीं बाजे और गाने होते रहे थे। किसी ने अर्ज़ किया, "हज़ूर! मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहब ने नाचने वाली को बुलाया था और रात के बीस रुपये देने का वादा किया था। सारी रात मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन के यहाँ नाच होता रहा है।" हज़ूर पुरनूर अलैहिस्सलाम ने एक लंबी आह भरकर फ़रमाया, "अल्लाह! यह कितनी नमकहलाल है!" यानी वह नाचने वाली। आपने फ़रमाया कि "यह तो नमकहलाल है कि बीस रुपये के बदले सारी रात नाचती-गाती रही और जागती रही।

हम अपने सच्चे ख़ालिक़ और मालिक के लिए एक-दो घंटे भी नहीं जाग सकते, जिसने हमें अनगिनत नेमतों से लाभान्वित किया है।

आपने ये वाक्य दो-तीन बार दोहराए।

(रिवायात असहाब अहमद अलैहिस्सलाम, भाग 3, पृष्ठ 278)

इन बाज़ारू औरतों के काम को देखकर भी आपका ध्यान अल्लाह तआला का हक़ अदा करने की ओर गया और आपने बड़े दर्द के साथ इस बात का इज़हार फ़रमाया कि ये लोग कुछ रुपयों के लिए अपनी नींदें बर्बाद करते हैं, जबकि हम अल्लाह तआला की अनगिनत नेमतों का शुक्र भी अदा नहीं करते। हम नफ़्ल और नमाज़ों की ओर ध्यान नहीं देते और न ही जाग सकते हैं, बल्कि बहुत से लोग फ़र्ज़ नमाज़ें अदा करने में भी सुस्ती कर जाते हैं। हमारे लिए फ़ज्र की नमाज़ के लिए उठना मुश्किल हो जाता है। इसलिए हर अहमदी को इस संबंध में अपना जायज़ा लेना चाहिए कि हम अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी का हक़ कहाँ तक अदा कर रहे हैं।

हज़ूर अलैहिस्सलाम के खाना खाने के समय शुक्रगुज़ारी

हज़रत शेख़ मुहम्मद इस्माईल साहब सरसावी रज़ियल्लाहु अन्हु इसका वर्णन करते हुए कहते हैं कि "हज़ूर अलैहिस्सलाम की आदत थी कि आप खाना खाते समय 'सुब्हानल्लाह' और 'अल्हम्दुलिल्लाह' कहा करते थे और इस तरह खाते थे जैसे किसी चीज़ को तलाश कर रहे हों।"

(रिवायात असहाब अहमद अलैहिस्सलाम, भाग 2, पृष्ठ 413)

अर्थात् आप अलैहिस्सलाम खाना खाते समय भी हर निवाले पर अल्लाह तआला की नेमतों को याद करके शुक्रगुज़ारी किया करते थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बारे में फ़रमाया कि "हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भी देखा है। आपका तरीक़ा यह था कि जब आप रोटी खाते तो उसका एक छोटा-सा टुकड़ा तोड़कर मुँह में डाल लेते और उसे तब तक अच्छी तरह चबाते रहते जब तक दाँत उसे चबा सकते थे। आपकी आदत बड़ा निवाला लेने की नहीं थी, बल्कि आप हमेशा छोटा निवाला लेते थे। जहाँ आप पहले निवाले को देर तक चबाते रहते, वहीं रोटी का एक और टुकड़ा लेकर उसे हाथ में मसलते जाते और साथ ही 'सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह' कहते जाते। कुछ देर बाद उसमें से कोई टुकड़ा सालन लगाकर मुँह में डाल लेते।"

(तफ़सीरे कबीर, भाग 9, पृष्ठ 261-262, संस्करण 2023 ई.)

हज़रत सैयद ज़ैनुल आबिदीन वलीउल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "मेरे कम उम्र होने के कारण और इसलिए भी कि हज़रत अक़दस मेरे पिता हज़रत डॉक्टर सैयद अब्दुस्सत्तार शाह साहब को अपने घर में ही मेहमान के तौर पर ठहराया करते थे, हम घर में ऐसे रहते थे जैसे एक ही परिवार के सदस्य हों। हम बिना किसी झिझक के घर के अंदर-बाहर आते-जाते थे और हज़ूर के घर में ही सोया करते थे।"

वे कहते हैं कि "मुझे अच्छी तरह याद है कि जैसे ही इलाके या शहर में प्लेग फैलती, हज़ूर न केवल अपने घर की सफ़ाई का आदेश देते, बल्कि बोर्डिंग हाउस की सफ़ाई का भी विशेष प्रबंध करते। इसी तरह सभी दोस्तों को आदेश देते कि अपने घरों में गंधक, आग, फ़िनाइल और गूगल आदि चीज़ों के ज़रिए कीटाणुओं को मारने का प्रबंध करें।" गूगल एक पेड़ की गोंद होती है, जिसे कीटाणु मारने और धूनी देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

हज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि साधनों का इस्तेमाल करना भी

अल्लाह तआला की नेमत का शुक्र अदा करना है।

यह भी अल्लाह तआला की नेमत है और उसका शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने ऐसी चीज़ें पैदा की हैं जो महामारी और बीमारियों से बचाव करती हैं। वातावरण में प्रदूषण, गंदगी या ज़हर फैलने पर उन्हें दूर करने के लिए भी इन चीज़ों का इस्तेमाल होता है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि हमें अल्लाह तआला की इस नेमत का भी शुक्र अदा करना चाहिए। यह उसके आदेश का पालन करने के समान है और साधनों को छोड़ देना शरीअत-ए-इलाहिया के विरुद्ध है। अर्थात् साधनों का इस्तेमाल न करना भी शरीअत के विरुद्ध है। तवक्कुल का दर्जा इसके बाद आता है। यानी:

साधनों को अपनाकर केवल उन्हीं पर भरोसा नहीं करना चाहिए, बल्कि सच्ची मारिफ़त यह है कि साधनों के पीछे अल्लाह तआला के हाथ को देखा जाए।

(रिवायात असहाब अहमद अलैहिस्सलाम, भाग 5, पृष्ठ 35; उर्दू लुग़त, भाग 16, पृष्ठ 304, उर्दू बोर्ड कराची)

अर्थात् जो कुछ मैं कर रहा हूँ, ये भी अल्लाह तआला की पैदा की हुई चीज़ें हैं। अल्लाह तआला इनके माध्यम से हमारे लिए भलाई के साधन पैदा फ़रमाए। इसलिए उसका शुक्र अदा करो। अगर इंसान इस तरह सोचे तो वह हर समय अल्लाह तआला का शुक्र अदा करता रहेगा।

हज़रत मुहम्मद इब्राहीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "एक बार जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम 1904 ई. में करम दीन वाले मुक़दमे के सिलसिले में गुरदासपुर में ठहरे हुए थे, तो यह विनम्र भी एक महीने तक गुरदासपुर में हज़ूर की सेवा में रहा। एक दिन मुल्तान के रहने वाले एक दोस्त ताज़ा पके हुए खजूर लाए। किसी दोस्त ने कहा कि ये गर्म होते हैं। खजूर लाने वाले साहब कहने लगे कि जितने चाहो खजूर खा लो और ऊपर से थोड़ा-सा प्याज़ खा लेना, कोई तकलीफ़ नहीं होगी।"

पुराने ज़माने में बुज़ुर्गों के अपने इलाज के कुछ घरेलू नुस्खे होते थे कि अगर कोई गर्म चीज़ खा ली है तो प्याज़ खा लो, उसका असर ख़त्म हो जाएगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे कि "अल्लाह तआला ने कितना अच्छा प्रबंध किया है कि हर चीज़ के असर को ठीक करने वाली चीज़ भी मौजूद होती है।" यानी उसके प्रभावों से बचाने के लिए दूसरी चीज़ भी मौजूद है। आपने फ़रमाया कि "जितने चाहो आम खा लो और ऊपर से थोड़े-से जामुन खा लो, कोई तकलीफ़ नहीं होगी। जितने चाहो केले खा लो और ऊपर से थोड़े-से कच्चे चावल चबा लो। सब हज़म हो जाएँगे।"

इस पर:

हज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक तक़रीर फ़रमाई कि अल्लाह तआला ने इंसान के लिए रूहानी और शारीरिक रूप से कितने ऊँचे प्रबंध किए हैं कि इंसान उनका शुक्र भी अदा नहीं कर सकता।

(रिवायात असहाब अहमद अलैहिस्सलाम, भाग 2, पृष्ठ 172)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किताब तज़करतुस्सहादतैन लिखते समय बीमारी से शिफ़ा पाने पर शुक्र अदा करते हुए लिखते हैं:

"जब मैंने इस किताब को लिखना शुरू किया तो मेरा इरादा था कि 16 अक्टूबर 1903 ई. को गुरदासपुर में एक विरोधी की ओर से मेरे ख़िलाफ़ दायर किए गए फ़ौजदारी मुक़दमे में जाने से पहले इस रिसाले को लिख लूँ और अपने साथ ले जाऊँ। लेकिन ऐसा हुआ कि मुझे गुर्दे में बहुत तेज़ दर्द होने लगा। मैंने सोचा कि यह काम अधूरा रह गया। केवल दो-चार दिन बाकी हैं। अगर मैं इसी तरह गुर्दे के दर्द में ग्रस्त रहा, जो एक जानलेवा बीमारी है, तो यह किताब पूरी नहीं हो सकेगी।

तब अल्लाह तआला ने मुझे दुआ की ओर ध्यान दिलाया। रात के समय, जब बारह बजे के बाद लगभग तीन घंटे गुज़र चुके थे, मैंने अपने घरवालों से कहा कि अब मैं दुआ करता हूँ, तुम आमीन कहना। इस तरह मैंने घर के सभी लोगों को इकट्ठा कर लिया।

मैंने इसी दर्दनाक हालत में शहज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ के ख़याल से दुआ की कि ऐ मेरे अल्लाह! मैं यह किताब उस मरहूम के लिए लिखना चाहता था। जब मैंने यह दुआ की तो उसी समय मुझे नींद-सी आने लगी और इल्हाम हुआ: 'सलामुन क़ौलन मिर्रब्बिर्रहीम।' अर्थात् सलामती और आराम है। यह ख़ुदा-ए-रहीम का कलाम है।

उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है कि अभी सुबह के छह भी नहीं बजे थे कि मैं बिल्कुल स्वस्थ हो गया और उसी दिन लगभग आधी किताब लिख ली। फ़लहम्दुलिल्लाहि अला ज़ालिक।"

(तज़करतुस्सहादतैन, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 20, पृष्ठ 74-75)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत का एक उज्ज्वल पहलू यह भी है कि आपके स्वभाव में दूसरों के छोटे-से-छोटे काम की क़दर करने और उनका एहसान मानने की भावना इतनी अधिक थी कि आप छोटी-छोटी सेवाओं और बातों पर भी शुक्रिया अदा किया करते थे।

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "इस सप्ताह में सबसे अजीब और दिलचस्प बात जो हुई और जिसने हमारे ईमान को बहुत मज़बूती दी, वह हज़रत के नाम एक ख़त का आना था। उसमें पक्के सबूत और विस्तार से लिखा था कि जलालाबाद, काबुल के इलाके में योज़ासफ़ नबी का एक चबूतरा मौजूद है। वहाँ मशहूर है कि लगभग दो हज़ार साल पहले यह नबी शाम से यहाँ आया था और काबुल सरकार की ओर से उस चबूतरे के नाम कुछ जागीर भी है। अधिक विस्तार में जाने का यह अवसर नहीं है।"

मौलवी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि इस ख़त से हज़रत अक़दस इतने ख़ुश हुए कि आपने फ़रमाया, "अल्लाह तआला गवाह और सब कुछजानने वाला है कि अगर कोई मुझे करोड़ों रुपये लाकर देता, तो भी मैं कभी इतना ख़ुश न होता जितना इस ख़त ने मुझे ख़ुशी दी है।"

मौलवी अब्दुल करीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, "भाइयो! दीन की बात पर यह ख़ुशी क्या इस बात का निशान नहीं कि यह अल्लाह की ओर से है? आज कौन है जो अल्लाह के कलमे को बुलंद करने की बातों पर इतनी ख़ुशी मनाए? मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि उस समय हज़रत की ख़ुशी देखकर और उसका अंदाज़ा लगाकर मैं अपने दिल में बहुत शर्मिंदा होता था। हालाँकि मैं भी ख़ुश था और दूसरे दोस्त भी ख़ुशियाँ मना रहे थे कि झूठ की हार के लिए एक और रास्ता निकल आया है और अब मसीह अलैहिस्सलाम के आने-जाने का पूरा नक़्शा मिल गया है। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़ुशी का कोई मुक़ाबला ही नहीं था।"

(अल-हकम, भाग 3, अंक 24, दिनांक 10 जुलाई 1899 ई., पृष्ठ 3, कॉलम 1 से लिया गया)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब बराहीने अहमदिया लिखी तो इस किताब की आर्थिक सहायता करने वालों के नाम उसमें लिखे। उनका शुक्रिया अदा किया और उनके लिए दुआ करने की प्रेरणा दी। इस दुआ वाली सूची में उन लोगों के नाम भी शामिल हैं जिन्होंने पाँच रुपये, दो रुपये और यहाँ तक कि दो आने भी दिए थे।

हज़ूर अलैहिस्सलाम लिखते हैं:

"उस ख़ुदावंदे-आलम का कितना शुक्र अदा किया जाए, जिसने सबसे पहले अपने फ़ज़्ल, करम और ग़ैबी कृपा से मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति को इस किताब को लिखने और तैयार करने की तौफ़ीक़ दी। फिर इस किताब को प्रकाशित करने, फैलाने और छपवाने के लिए इस्लाम के प्रमुख लोगों, बुज़ुर्गों, बड़े लोगों, अमीरों तथा दूसरे भाइयों, मोमिनों और मुसलमानों को इसके लिए उत्सुक किया और उनकी तवज्जोह इस ओर दिलाई।

इसलिए यहाँ उन सभी सहायता करने वालों का शुक्रिया अदा करना भी ज़रूरी है, जिनकी उदारता और तवज्जोह से मेरे दीन के उद्देश्य नष्ट होने से बच गए और मेरी मेहनत बेकार जाने से सुरक्षित रही। मैं इन लोगों की सहायता के लिए इतना एहसानमंद हूँ कि मेरे पास ऐसे शब्द नहीं हैं जिनसे मैं उनका शुक्र अदा कर सकूँ।

ख़ास तौर पर जब मैं देखता हूँ कि कुछ लोगों ने इस नेक काम की सहायता में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है और कुछ ने आगे भी अधिक सहायता देने के वादे किए हैं, तो मेरी कृतज्ञता और एहसानमंदी और भी बढ़ जाती है।"

फिर आपने उन लोगों के नाम भी लिखे जिन्होंने सहायता की थी। आपने फ़रमाया:

"मैंने उन सभी हिम्मत वाले और पक्के इरादे वाले लोगों के शुभ नाम, जिन्होंने इस किताब को ख़रीदने और छपवाने में कुछ न कुछ सहायता दी है, उनके दिए हुए रुपयों के साथ लिख दिए हैं।"

इस तरह आपने सभी के नाम लिखे और फ़रमाया कि आगे भी किताब की छपाई पूरी होने तक यह सिलसिला जारी रहेगा, ताकि जब तक दुनिया में इस किताब का फ़ायदा और फ़ैज़ बाक़ी रहे, उनके नाम भी लिखे जाते रहें। जो भी इस

किताब से लाभ उठाए, वह मुझे और मेरी सहायता करने वालों को अपनी नेक दुआओं में याद रखे।

(बराहीने अहमदिया, भाग प्रथम, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 1, पृष्ठ 5)

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मिननुर्रहमान नाम की एक किताब लिखी। इसमें आपने साबित किया कि अरबी भाषा सभी भाषाओं की माँ है। इस संबंध में:

जिन दोस्तों ने कुछ हवाले निकालने में आपकी सहायता की, उनका शुक्रिया अदा करते हुए

आप फ़रमाते हैं:

"हम यहाँ अपने उन दोस्तों का शुक्र अदा किए बिना नहीं रह सकते जिन्होंने हमारे इस काम में भाषाओं के बीच समानता साबित करने के लिए सहायता दी है। हम बहुत ख़ुशी से यह बात ज़ाहिर करते हैं कि:

हमारे सच्चे दोस्तों ने भाषाओं की समानता साबित करने के लिए इतनी मेहनत की है कि जब तक यह दुनिया आबाद रहेगी, तब तक उनकी यह मेहनत यादगार बनी रहेगी।

इन ख़ुदा के बंदों ने बड़ी बहादुरी से अपना कीमती समय हमें दिया है और दिन-रात बहुत मेहनत करके इस महान काम को पूरा किया है। मैं जानता हूँ कि अल्लाह तआला के दरबार में उन्हें बहुत सवाब मिलेगा, क्योंकि वे ऐसी जंग में शामिल हुए हैं जिसमें जल्द ही इस्लाम की ओर से जीत के नगाड़े बजेंगे। इसलिए उनमें से हर व्यक्ति अल्लाह की ओर से सम्मान का तमगा पाने का हक़दार है।

मैं इस बात को बयान नहीं कर सकता कि वे किस तरह हर सभा में भाषाओं के बीच समानता तलाश करने के लिए अंदर ही अंदर सैकड़ों कोस दूर चले जाते थे और फिर कामयाबी के साथ लौटकर किसी समान शब्द का तोहफ़ा पेश करते थे। इसी तरह दुनिया की भाषाओं के शब्द हमारे पास जमा हो गए।

मैं कभी नहीं भूलूँगा कि इस महान काम में हमारे सच्चे दोस्तों ने ऐसी सहायता दी जिसके बारे में अपनी कृतज्ञता बयान करने के लिए मेरे पास पर्याप्त शब्द नहीं हैं। मैं दुआ करता हूँ कि अल्लाह तआला उनकी मेहनत स्वीकार करे, उन्हें अपने लिए स्वीकार कर ले, उन्हें हमेशा बुरे जीवन से दूर और सुरक्षित रखे, उन्हें अपना प्रेम और शौक़ प्रदान करे और हमेशा उनके साथ रहे। आमीन, फिर आमीन।"

फिर आपने उन लोगों के नाम भी लिखे जिन्होंने सहायता की थी। उनमें सबसे पहले हज़रत हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम लिखा। इसके बाद हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हु और इसी तरह बहुत से दूसरे सहाबा के नाम भी हैं।

आप फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि इस काम में किसकी कोशिशें अधिक हैं। वह किसी सच्चे व्यक्ति की मेहनत को व्यर्थ नहीं करेगा। लेकिन जहाँ तक हमारा ज्ञान और हमारी जानकारी हमें बताती है, सबसे अधिक कोशिश मेरे भाई हकीम मौलवी नूरुद्दीन साहब और मेरे भाई मौलवी अब्दुल करीम साहब की है, जो अपने सभी संबंध छोड़कर कई महीनों से इस काम के लिए मेरे पास मौजूद हैं।

हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहब ने केवल इतनी ही सहायता नहीं की, बल्कि इस काम के लिए अंग्रेज़ी की अच्छी-अच्छी किताबें अपनी कीमत से ख़रीदकर मँगवाईं और इसी उद्देश्य के लिए कीमती किताबों का संग्रह भी जमा किया। जज़ाहुमुल्लाहु ख़ैरन। वल्लाहु ला युज़ीउ अजरल मुहसिनीन।"

अर्थात् अल्लाह तआला उन्हें बेहतर बदला दे और अल्लाह तआला एहसान करने वालों का बदला व्यर्थ नहीं करता।

(मिननुर्रहमान, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 9, पृष्ठ 143-144)

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम मियाँ मंज़ूर मुहम्मद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु का ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला के एहसान का शुक्र अदा करने के लिए यह बात बयान करना ज़रूरी है कि मेरे अहम कामों और किताबों की लिखाई में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मुझे एक अच्छा और क़ाबिल-ए-क़द्र सच्चा सहायक मिला है। यानी अज़ीज़ मियाँ मंज़ूर मुहम्मद, जो नकल लिखने वाले हैं और जिनकी लिखावट बहुत सुंदर है। वे दुनिया के लिए नहीं, बल्कि केवल दीन के प्रेम में काम करते हैं। उन्होंने अपने वतन से हिजरत करके क़ादियान में ही रहना शुरू कर दिया है।

यह अल्लाह तआला की बड़ी कृपा है कि मेरी इच्छा के अनुसार ऐसा सच्चा और मेहनती सहायक मुझे मिला है, जिससे मैं दिन या रात किसी भी समय नकल लिखने की सेवा लेता हूँ। वह पूरी मेहनत से अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए यह सेवा करता है।

यही कारण है कि इस रूहानी जंग के समय मेरी ओर से विरोधियों को पराजित करने वाले रिसालों के माध्यम से विरोधियों पर लगातार वार हो रहे हैं। वास्तव में, ऐसे सहायक साधन उपलब्ध करा देना भी अल्लाह तआला का एक निशान है। जिस ओर से भी देखा जाए, मेरे लिए सभी अच्छे साधन उपलब्ध किए गए हैं और लिखने में मुझे ऐसी शक्ति दी गई है कि मानो मैं नहीं, बल्कि फ़रिश्ते लिखते जाते हैं, हालाँकि देखने में मेरे ही हाथ होते हैं।"

(मजमूआ इश्तिहारात, भाग 2, पृष्ठ 546, संस्करण 2019 ई.)

आप अलैहिस्सलाम कोई भी ऐसा अवसर हाथ से नहीं जाने देते थे, जब अपने साथियों और थोड़ा-सा भी काम करने वालों का शुक्रिया अदा न करें। आपने कभी अपनी उस मेहनत का ज़िक्र नहीं किया जो आप अपने साथियों के लिए करते थे, बल्कि हमेशा उनकी प्रशंसा करते थे कि उन्होंने मेरी सहायता की और मेरे लिए यह काम आसान कर दिए।

हज़रत शेख़ याक़ूब अली इरफ़ानी साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि:

"आप ख़ुद्दाम के छोटे-छोटे कामों की हमेशा क़दर करते और उनका दिल बढ़ाते थे। उनकी मेहनत से अधिक देते थे। जिन दिनों किसी किताब या रिसाले को जल्दी और ज़रूरी तौर पर छापना और प्रकाशित करना होता और रात को भी काम चलता, तो हज़ूर के साथ प्रेस के कर्मचारी या लिखने वाले जो लोग काम करते, उनके लिए दूध और दूसरी ज़रूरी चीज़ों का विशेष ध्यान से प्रबंध करते और सामान्य से अधिक मेहनताना देते। इसके अलावा, उनके काम पर केवल ख़ुशी ही नहीं जताते थे, बल्कि उनका शुक्रिया भी अदा करते थे।"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, भाग 3, पृष्ठ 348)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि:

"नबियों का दिल बहुत शुक्रगुज़ार होता है। वे छोटी-से-छोटी बात पर भी बहुत एहसान महसूस करते हैं।"

आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"मैंने देखा है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें जब दिन-रात छपती थीं, तो इसके बावजूद कि आप कई-कई रातें बिल्कुल नहीं सोते थे, जब कोई व्यक्ति रात के समय प्रूफ़ लेकर आता, तो उसकी आवाज़ सुनकर आप ख़ुद उठकर उसे लेने जाते और साथ ही कहते जाते, 'जज़ाकल्लाहु अहसनल जज़ा।' यानी अल्लाह तुम्हें सबसे अच्छा बदला दे। उन्हें कितनी तकलीफ़ हुई है। ये लोग कितनी तकलीफ़ सहन करते हैं। अल्लाह उन्हें अच्छा बदला दे। हालाँकि आप ख़ुद सारी रात जागते रहते थे।"

आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि:

"मैंने कई बार आपको काम करते देखकर सोया और जब कभी आँख खुली तो आपको काम करते ही देखा, यहाँ तक कि सुबह हो गई। दूसरे लोग भी अल्लाह के लिए काम करते थे, लेकिन आप अलैहिस्सलाम उनकी तकलीफ़ महसूस करते थे। ऐसा क्यों था? इसलिए कि नबियों के दिल में एहसान का बहुत एहसास होता है।"

(अल-फ़ज़्ल, 19 अगस्त 1916 ई., भाग 4, अंक 13, पृष्ठ 7, कॉलम 3)

फिर एक घटना हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हाफ़िज़ नबी बख़्श साहब, निवासी फ़ैज़ुल्लाह चक, ने उनसे बयान किया:

"एक बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने बाग़ में सैर के लिए तशरीफ़ ले गए। उस समय आपके मुबारक हाथ में बेंत की एक छड़ी थी। आपने एक पेड़ से फल तोड़ने के लिए छड़ी मारी, लेकिन छड़ी पेड़ में ही अटक गई। वह दूर से फेंकी गई थी और ऐसी फँसी कि नीचे उतरने का नाम नहीं लेती थी। सहाबा ने बहुत कोशिश की कि छड़ी उतार लें, लेकिन कामयाब न हुए।

तब मैंने अर्ज़ किया कि हज़ूर! मैं पेड़ पर चढ़कर उतार देता हूँ। मैं तुरंत पेड़ पर चढ़ा और मुबारक छड़ी उतार लाया। हज़ूर इतने ख़ुश और हैरान हुए कि बार-बार प्यार भरे शब्दों में फ़रमाते थे, 'मियाँ नबी बख़्श! आपने तो कमाल कर दिया कि पेड़ पर चढ़कर तुरंत छड़ी उतार ली। आप पेड़ पर कैसे चढ़े और पेड़ पर चढ़ना कैसे सीखा? यह छड़ी तो हमारे वालिद साहब के ज़माने की थी, जिसे मानो आपने आज नया कर दिया।'

रास्ते में भी हज़ूर बार-बार फ़रमाते रहे कि मियाँ नबी बख़्श ने पेड़ पर चढ़कर

छड़ी उतारने में कमाल कर दिया। हज़ूर की आदत में यह बात शामिल थी कि चाहे कोई छोटा हो या बड़ा, किसी को 'तू' कहकर संबोधित नहीं करते थे। हालाँकि मैं छोटा बच्चा था, लेकिन हज़ूर ने कभी मुझे 'तू' कहकर नहीं पुकारा।"

(सीरतुल महदी, भाग 1, हिस्सा 3, रिवायत नंबर 543, पृष्ठ 536)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं कि डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहब ने उनसे बयान किया कि:

"जब कोई व्यक्ति हज़रत साहब अलैहिस्सलाम के लिए कोई तोहफ़ा लाता तो आप बहुत शुक्रगुज़ार होते थे। घर में भी उसके सच्चे प्रेम का ज़िक्र फ़रमाते और बताते थे कि अमुक व्यक्ति ने यह चीज़ भेजी है।"

(सीरतुल महदी, भाग 1, हिस्सा 3, रिवायत नंबर 713, पृष्ठ 647)

आप छोटी-छोटी भेंटों पर भी शुक्रगुज़ारी का इज़हार किया करते थे।

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि डॉक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु की मरहूमा पत्नी ने अपने लेख में लिखा कि एक बार डॉक्टर साहब तीन महीने की छुट्टी लेकर आगरा से क़ादियान आए। आगरा में खुरमे और बालूशाही जैसी एक मिठाई बनती थी, जो बहुत अच्छी और बड़े आकार की होती थी। हज़ूर को भी पसंद थी। डॉक्टर साहब जब आते तो हज़रत साहब के लिए खुरमे ज़रूर लाते थे।

एक दिन जब वे आए तो हज़ूर अलैहिस्सलाम ने सुबह से खाना नहीं खाया था। वे कहती हैं कि अस्र के समय मैं घर में आई तो आप बहुत ख़ुश हुए और मुझसे सफ़र का हाल पूछा। अम्माँ जान रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा कि खाना तैयार है। आपने फ़रमाया कि खाना खाने को दिल नहीं चाह रहा।

फिर हज़रत अम्माँ जान ने कहा कि मुराद ख़ातून आपके लिए आगरा से खुरमे लाई हैं। यह सुनकर आप बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया कि मुझे पसंद हैं, लाओ, खाऊँ। जब वे सामने लाए गए तो आपने उनकी बहुत प्रशंसा की और फ़रमाया कि इतने ज़्यादा हैं! फिर आपने उन्हें खाया और फ़रमाया कि मेरे लिए रख लो, कुछ अभी खाऊँगा और कुछ बाद में खाऊँगा।

आपके खाना खाने के बारे में पहले भी बयान हो चुका है कि आप किस तरह थोड़ा-थोड़ा खाते और दुआ करते हुए खाना खाते थे। वे कहती हैं कि इस छोटी-सी बात पर आपकी इतनी प्रशंसा से मेरा दिल बहुत ख़ुश हुआ, जिसे मैं बयान नहीं कर सकती। जब मैंने डॉक्टर साहब को बताया तो वे भी बहुत ख़ुश हुए और देर तक आसमान की ओर मुँह करके 'सुब्हानल्लाह, सुब्हानल्लाह' पढ़ते रहे। डॉक्टर साहब भी बहुत सच्चे और निष्ठावान थे।

(सीरतुल महदी, भाग 2, हिस्सा 5, रिवायत नंबर 1297, पृष्ठ 193-194 से लिया गया; उर्दू लुग़त, भाग 8, पृष्ठ 540)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर गुरदासपुर में मौलवी करम दीन निवासी भें की ओर से मुक़दमा दायर था, तो उस समय रुपयों की तंगी थी और ख़र्च बढ़ गए थे। अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार कुछ लोगों को आर्थिक सहायता के लिए प्रेरित किया गया। उनमें डॉक्टर ख़लीफ़ा रशीदुद्दीन साहब भी शामिल थे।

इस अवसर पर उनके घर में जो कुछ था, उन्होंने इकट्ठा करके सब भेज दिया और लिख दिया कि आगे भी जो आमदनी होगी, वह भेजता रहूँगा। इसलिए वे अपनी तनख़्वाह और प्रैक्टिस से जो कुछ कमाते, वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में भेज देते थे।

उन दिनों उनके यहाँ ठहरे हुए एक दोस्त ने बताया कि मैंने उनसे कहा कि आप सब कुछ वहाँ भेज देते हैं, अपने लिए कुछ क्यों नहीं रखते? उन्होंने जवाब दिया कि हाँ, इस समय ऐसा ही होना चाहिए।

उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें एक ख़त लिखा, जिसे मैंने ख़ुद पढ़ा है। डॉक्टर साहब ने कहा कि यह ऐसा समय है कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा की जाए। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने वह ख़त ख़ुद पढ़ा था। उसमें आपने लिखा था, "आपने क़ुर्बानी की हद कर दी है। अब आपको चंदा देने की ज़रूरत नहीं।"

हालाँकि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमेशा नियमित रूप से चंदा देने की शिक्षा दिया करते थे। आपने फ़रमाया था कि जो व्यक्ति तीन महीने तक चंदा न दे, वह जमाअत में नहीं रह सकता।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि यह ख़त शायद आज भी ख़लीफ़ा साहब मरहूम के घर में मौजूद हो। इसके बाद भी वे चंदा देते रहे और उन्हें देना भी चाहिए था। ऐसा नहीं था कि ख़त लिखने के बाद उन्होंने चंदा देना बंद कर दिया। वे लगातार चंदा देते रहे और उन्हें देना चाहिए था, क्योंकि पहले वे अपना फ़र्ज़ अदा करते थे और बाद में शुक्रिया के तौर पर चंदा देते थे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की वही के अनुसार जो किताब लिखी, उसमें हमें वसीयत से अलग रखा गया है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में हमेशा यह कसक रहती थी कि हमें क़ुर्बानी के एक अवसर से महरूम कर दिया गया है। फिर मुझे ख़याल आया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इतनी इबादत करते थे कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बताती हैं कि आपके पाँव सूज जाते थे। यह देखकर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ किया कि जब अल्लाह तआला ने आपके सभी गुनाह माफ़ कर दिए हैं तो आप इतनी तकलीफ़ क्यों उठाते हैं? आपने फ़रमाया:

"अफ़ला अकूनु अब्दन शकूरा।"

अर्थात्, "क्या मैं शुक्रगुज़ार बंदा न बनूँ?"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इस दर्जे पर पहुँचकर यदि कोई काम फ़र्ज़ और अनिवार्य न भी हो, तो भी शुक्रिया के तौर पर करना चाहिए। मुझे ख़याल आया कि यद्यपि हमें वसीयत के चंदे से अलग रखा गया है, फिर भी शुक्र तो अदा करना चाहिए।

इसलिए इसके बाद मैंने ऐसा तरीक़ा अपनाया कि मेरा चंदा वसीयत करने वालों के चंदे से अधिक ही रहे। फिर मुझे अपना एक इल्हाम याद आया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के कुछ दिन बाद मुझे इल्हाम हुआ:

"इअमलू आला दाऊदा शुक्रा।"

अर्थात्, "ऐ दाऊद के परिवार वालो! शुक्र के तौर पर अमल करो।"

"या दाऊदु आमिल बिन्नासि रिफ़्क़न व हुस्ना।"

अर्थात्, "ऐ दाऊद! लोगों के साथ नरमी और अच्छे व्यवहार से पेश आओ।"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इसका अर्थ यह है कि अल्लाह तआला कुछ लोगों से कठिनाइयाँ दूर कर देता है, लेकिन उनका फ़र्ज़ होता है कि वे शुक्रिया के तौर पर फिर भी नेक अमल करें। शायद यह इल्हाम मेरे इसी विचार को दूर करने के लिए था।

(ख़ुतबाते महमूद, भाग 1, पृष्ठ 220-221 और हाशिया पृष्ठ 224-225; तज़करा, पृष्ठ 109 और 120, संस्करण 1956 ई.; तज़करा, पृष्ठ 91 और 255, संस्करण 2023 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इसके बाद मैंने बहुत अधिक चंदा देना शुरू किया। इस अवसर पर मैं यह भी बता दूँ कि मेरे पास भी एक सवाल आया है।

कुछ लोग यह सवाल उठाते हैं कि शायद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के परिवार के सभी सदस्य या ख़लीफ़ा चंदा देने से अलग हैं और उन्हें छूट प्राप्त है। इसलिए स्पष्ट हो कि यह छूट केवल आपके पाँच बच्चों के लिए थी। न उनके बेटों की पत्नियों के लिए, न बेटियों के पतियों के लिए और न ही उनकी संतानों के लिए। जो भी वसीयत करेगा, उसे वसीयत का चंदा देना होगा और अपनी जायदाद का हिस्सा भी देना होगा। उसे उसी तरह चंदा देना होगा, जिस तरह दूसरे वसीयत करने वाले देते हैं।

बहरहाल, मैं यह भी स्पष्ट कर दूँ कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ादियान में जो बहिश्ती मक़बरा की ज़मीन है, वह भी प्रदान की थी। शायद यह भी एक कारण था। इसके अलावा भी बहुत-से कारण होंगे, जो अल्लाह तआला की नज़र में होंगे। इन्हीं कारणों से अल्लाह तआला ने आपके पाँच बच्चों को वसीयत के चंदे से छूट दी और बहिश्ती मक़बरा में दफ़न होने की अनुमति दी। लेकिन इन लोगों ने बहुत अधिक क़ुर्बानियाँ की हैं। हज़रत अम्माँ जान रज़ियल्लाहु अन्हा ने भी और आपकी औलाद ने भी हर दौर में बहुत क़ुर्बानियाँ की हैं।

इसलिए जिस तरह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया है कि आपने जमाअत के उद्देश्यों के लिए वसीयत करने वाले व्यक्ति से भी बढ़कर आर्थिक क़ुर्बानियाँ कीं, उसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बाकी औलाद ने भी क़ुर्बानियाँ की हैं।

यह भी स्पष्ट हो कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के बाद कोई भी ख़लीफ़ा इस छूट में शामिल नहीं है। सभी ने वसीयत की है और अपना वसीयत का

चंदा अदा करते हैं। इसी तरह ख़लीफ़ाओं की ओर से की जाने वाली दूसरी तहरीकों में भी सभी ने हिस्सा लिया है और अपनी क्षमता के अनुसार बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है। किसी ख़लीफ़ा को या परिवार के किसी सदस्य को कोई छूट नहीं है। यह छूट केवल उन पाँच बच्चों के लिए थी। मैं यह स्पष्टीकरण इसलिए दे रहा हूँ क्योंकि इस बारे में एक सवाल मेरे पास आया था।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहब औजलवी रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें लिखकर बताया कि जब मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर गुरदासपुर में फ़ौजदारी मुक़दमा दायर किया हुआ था और हज़ूर ख़ान साहब अली मुहम्मद पेंशनर के मकान में, मस्जिद हज्जामाँ के पास ठहरे हुए थे, तब मैं, मियाँ जमालुद्दीन, मियाँ इमामुद्दीन और मियाँ ख़ैरुद्दीन निवासी सिखवाँ, हज़ूर के साथ थे। बाकी दोस्त दूसरी जगह ठहरे हुए थे।

एक दिन हज़ूर को पेट ख़राब होने की शिकायत हुई। आम तौर पर आपको आँतों की तकलीफ़ रहती थी, इसलिए आप बार-बार शौच के लिए जाते थे। हज़ूर ने हमें सोते रहने के लिए कहा कि मैं उठूँगा, तुम लोग न उठा करो। जब हज़ूर शौच के लिए उठते तो मैं भी उसी समय उठकर पानी का लोटा लेकर उनके साथ जाता। सारी रात ऐसा ही होता रहा। हर बार हज़ूर यही फ़रमाते कि तुम सोते रहो।

सुबह हज़ूर ने सभा में बैठकर बताया कि मसीह अलैहिस्सलाम के हवारियों और हमारे दोस्तों में एक स्पष्ट अंतर है। एक बार मसीह अलैहिस्सलाम को तकलीफ़ होती है तो वे अपने हवारियों को जगाकर कहते हैं कि जागते रहो और दुआएँ माँगो, लेकिन वे सो जाते हैं। आप बार-बार उन्हें जगाते हैं, मगर वे फिर सो जाते हैं। इसके विपरीत:

मसीह मुहम्मदी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हवारियों का यह हाल है कि हम अपने दोस्तों को बार-बार कहते हैं कि सोते रहो, लेकिन वे फिर भी जागते रहते हैं।

इसलिए मेरा नाम लेकर आपने फ़रमाया कि:

"मैं नहीं जानता कि मियाँ अब्दुल अज़ीज़ सारी रात सोए भी हैं या नहीं। मेरे उठते ही वे तुरंत होशियारी के साथ उठ खड़े होते थे और मेरे बार-बार कहने के बावजूद कि सोते रहो, उठ खड़े होते थे।"

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि:

"हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम का यह कथन सच्चा है और निश्चित रूप से सच्चा है कि पेड़ अपने फल से पहचाना जाता है। इसलिए हर निष्पक्ष व्यक्ति को मानना पड़ेगा कि जिस प्रकार के मीठे फल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की संगति ने पैदा किए हैं, वैसे फल हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम की संगति पैदा नहीं कर सकी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पाक साँसों ने हज़ारों-लाखों ऐसे इंसानों का समूह तैयार कर दिया जो आपके लिए अपनी जान क़ुर्बान कर देना सभी गर्व की बातों से बढ़कर गर्व समझते थे और आज तक ऐसा ही समझते हैं।"

वे आपकी थोड़ी-सी तकलीफ़ पर भी अपना हर आराम और सुख क़ुर्बान करने के लिए तैयार थे और आज भी हैं। लेकिन हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम बारह लोगों की छोटी-सी जमाअत को भी संभाल नहीं सके और उनमें से एक ने तीस रुपये लेकर आपको पकड़वा दिया तथा सरकार को ख़बर कर दी।

(सीरतुल महदी, भाग 1, रिवायत नंबर 701, पृष्ठ 639-640 से लिया गया)

हज़रत इनायतुल्लाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "जब मैं पहली बार क़ादियान आया तो अपने साथ इत्र की एक शीशी लाया था। मैंने पैदल सफ़र किया और रात बटाला में ठहरा। जब शीशी देखी तो एक बूँद के अलावा बाकी सारा इत्र ख़त्म हो चुका था। मुझे बहुत अफ़सोस हुआ।

शाम की नमाज़ के समय जब हज़ूर मस्जिद मुबारक की छत पर तशरीफ़ लाए और मैंने आपसे हाथ मिलाया, फिर आपकी सेवा करने लगा, तो मैंने अर्ज़ किया कि मैं इत्र की एक शीशी लाया था, लेकिन रास्ते में वह ख़त्म हो गई। मैंने वही शीशी हज़ूर की सेवा में पेश कर दी, जिसमें केवल एक बूँद बची थी। आपने फ़रमाया कि तुम्हें पूरी शीशी का सवाब मिल गया है।"

आपने जज़ाकल्लाह भी कहा।

(रिवायात असहाब अहमद, भाग 1, पृष्ठ 131)

हज़रत मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "मैं लगभग बीस वर्ष का था। गुरदासपुर में करम दीन जहलमी के मुक़दमे का फ़ैसला सुनाया जाना था। वास्तव में वह भें, ज़िला जहलम का रहने वाला था, जो आजकल ज़िला चकवाल में आता है। मैं एक दिन पहले अपने गाँव से वहाँ पहुँच गया था।

एक कोठी में हज़ूर अलैहिस्सलाम भी ठहरे हुए थे। गर्मी का मौसम था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक कमरे में बैठे थे। वहाँ मेरे वालिद मियाँ जमालुद्दीन साहब, मियाँ इमामुद्दीन साहब सिखवानी और चौधरी अब्दुल अज़ीज़ साहब भी मौजूद थे। मैं वहाँ गया और हज़ूर को पंखा झलने लगा।

हज़ूर ने मेरी ओर देखा और मेरे पिता मियाँ जमालुद्दीन साहब की तरफ़ इशारा करके मुस्कराते हुए फ़रमाया कि मियाँ इस्माईल ने भी आकर सवाब में हिस्सा ले लिया है।"

वे कहते हैं कि हज़ूर का छोटी-सी सेवा से ख़ुश हो जाना जब भी मुझे याद आता है तो मेरे दिल में ख़ुशी पैदा होती है।

(रिवायात असहाब अहमद, भाग 2, पृष्ठ 139)

हज़रत मियाँ सदरुद्दीन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि "आपके शरीर पर ऊन की एक लोई होती थी, जिसे कंधे पर डालकर हज़ूर बाहर तशरीफ़ ले जाया करते थे। एक बार चौधरी भोले ने मुझे बताया कि मैं एक बार हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के साथ बटाला गया। आपके पास एक घोड़ा था। कुछ देर आप उस पर सवार रहे, फिर मुझे सवार कर दिया और कुछ समय घोड़े को खाली लेकर चले ताकि वह भी आराम कर सके।"

इसी तरह अहमदिया स्कूल के चपरासी चराग़ के पिता ने मुझे बताया कि एक बार हज़ूर मुझे फ़ज्जे कश्मीरी वाले कुएँ पर ले गए ताकि वहाँ नहाया जा सके। रास्ते में मुझे एक पैसा दिया और कहा कि रेवड़ियाँ ले आओ।

जब मैं रेवड़ियाँ लेकर आया तो आपने उनके दो हिस्से किए और एक हिस्सा मुझे देने लगे। मैंने लेने से इनकार कर दिया। हज़रत ने फ़रमाया कि मैं अकेला कैसे खाऊँ? पैसा मेरा था और रेवड़ियाँ मँगवाने में मेहनत तुम्हारी हुई। इसलिए आपने आधी रेवड़ियाँ मुझे दे दीं।

(रिवायात असहाब अहमद, भाग 4, पृष्ठ 93)

यह भी दूसरों के काम की क़दर करने और शुक्रिया अदा करने का एक तरीक़ा है। जो भी व्यक्ति किसी भी रूप में आपका काम करता था, चाहे छोटा हो या बड़ा, आप उसका शुक्र अदा फ़रमाते थे।

मैंने इसकी कई मिसालें दी हैं।

हज़रत शेर मुहम्मद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु भी बयान करते हैं कि करम दीन के मुक़दमे में जब हज़ूर तारीख़ पर जहलम गए तो बटाला में मेरे दोस्तों ने चाय का प्रबंध किया हुआ था और हमें बुलाया था। सभी दोस्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ थे। उनमें मौलवी अब्दुल लतीफ़ साहब शहीद रज़ियल्लाहु अन्हु भी शामिल थे।

तब हज़रत अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि चाय पिलाने वाला कौन है? मैंने अर्ज़ किया कि हज़ूर, ये आपके ख़ादिम हैं। ये उन अंग्रेज़ महिलाओं के घरों में रसोइए हैं, जो अधिकारियों की पत्नियाँ हैं और जो हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में यह प्रचार करती फिरती हैं कि ख़ुदा और उसका बेटा है।

अर्थात् वहाँ चाय का प्रबंध करने वाले लोग उन लोगों के नौकर थे जो हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा कहते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह बात सुनकर ख़ुशी का इज़हार किया और चाय का प्रबंध करने वालों का शुक्रिया भी अदा किया। वे ईसाई थे या ग़ैर-मुस्लिम, या किसी भी समुदाय के दोस्त थे। आपने केवल वहीं उनका शुक्रिया अदा नहीं किया, बल्कि अख़बार में भी उनके शुक्रिया का ऐलान किया कि इन लोगों ने मेरी सेवा की है।

इससे पता चलता है कि आप अलैहिस्सलाम ने उनके काम को कितनी अहमियत दी कि केवल ज़बानी शुक्रिया ही अदा नहीं किया, बल्कि अख़बार में भी उनका शुक्रिया प्रकाशित करवाया।

(रिवायात असहाब अहमद, भाग 2, पृष्ठ 376)

अल्लाह तआला हमें भी शुक्रगुज़ारी के ऊँचे स्तर अपनाने की तौफ़ीक़ प्रदान करे।

★ ★ ★

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

बनी मुस्तलिक़ का युद्ध

उहद के युद्धोपरान्त मक्का में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा। मक्का वालों को हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) से जो शत्रुता थी और आप[स.] के विपरीत लोगों में घृणा फैलाने के लिए देश भर में जो उपाय कर रहे थे उनकी परवाह न करते हुए मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने इस विकट संकट के समय में मक्का के निर्धनों की सहायता के लिए धन राशि एकत्र की परन्तु इस भलाई का भी मक्का वालों पर कुछ प्रभाव न हुआ तथा उनकी शत्रुता में कुछ अन्तर न आया अपितु वे शत्रुता में और भी बढ़ गए। ऐसे क़बीले भी जो इस से पूर्व मुसलमानों के साथ सहानुभूति का व्यवहार करते थे शत्रु बन गए। उन कबीलों में से एक क़बीला बनी मुस्तलिक़ का था; मुसलमानों के साथ उनके संबंध अच्छे थे, परन्तु अब उन्होंने मदीना पर आक्रमण करने की तैयारी आरम्भ कर दी। जब हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को उन की तैयारी का ज्ञान हुआ तो आपने वस्तु स्थिति मालूम करने के लिए कुछ लोग भेजे जिन्होंने वापस आकर उन सूचनाओं को सच बताया। इस पर हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि स्वयं जाकर इस नए आक्रमण का सामना करें। अतः आप ने एक सेना तैयार की तथा उसे लेकर बनू मुस्तलिक की ओर गए। जब मुसलमानों की सेना का शत्रुओं से सामना हुआ तो हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने प्रयास किया कि शत्रु युद्ध किए बिना पीछे हट जाने पर तैयार हो जाए, परन्तु उन्होंने इन्कार किया। अतः युद्ध हुआ और कुछ ही घंटों में शत्रु को पराजय का मुख देखना पड़ा।

चूंकि मक्का के काफ़िर मुसलमानों को हानि पहुँचाने पर तुले हुए थे तथा मित्र क़बीले भी शत्रु बन रहे थे इसलिए उन धोखेबाज़ों ने भी जो मुसलमानों के अन्दर मौजूद थे इस अवसर पर साहस किया कि वे मुसलमानों की ओर से युद्ध में भाग लें। कदाचित् उन का विचार था कि इस प्रकार उन्हें मुसलमानों को हानि पहुँचाने का अवसर प्राप्त हो जाएगा बनू मुसतलिक के साथ छेड़ा गया युद्ध कुछ ही घंटों में समाप्त हो गया। अतः इस युद्ध के मध्य मुनाफ़िक लोगों को उपद्रव करने का अवसर प्राप्त न हो सका परन्तु हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि बनू मुस्तलिक़ की बस्ती में कुछ दिन ठहरें। आपके अस्थायी तौर पर ठहरने के समय एक मक्का निवासी मुसलमान का एक मदीना निवासी मुसलमान से कुएं से पानी निकालने के संबंध में झगड़ा हो गया। संयोग से यह मक्का निवासी एक आज़ादी प्राप्त दास था, उसने मदीने वाले व्यक्ति को मारा जिस पर उस मदीनावासी ने अन्सार (मदीना वाले मुसलमान) को पुकारा और मक्कावासी ने मुहाजिरों (मक्का के प्रवासी) को पुकारा और इस प्रकार परस्पर उपद्रव फैल गया। किसी ने यह मालूम करने का प्रयास न किया कि मूल घटना क्या है। दोनों ओर से युवकों ने तलवारें निकाल लीं। अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल ने समझा कि ऐसा अवसर ख़ुदा की ओर से मिल गया है। उसने चाहा कि आग पर तेल डाले। उसने मदीना वालों को सम्बोधित करके कहा कि इन मुहाजिरों पर तुम्हारी सहानुभूति सीमा से अधिक बढ़ गई है और तुम्हारे सद्व्यवहार से इनके सर फिर गए हैं और ये दिन प्रतिदिन तुम्हारे सर चढ़ते जाते हैं। निकट था कि इस भाषण का वही प्रभाव होता जो अब्दुल्लाह चाहता था और झगड़ा बढ़ जाता परन्तु ऐसा न हुआ। अब्दुल्लाह ने अपने उपद्रवपूर्ण भाषण का अनुमान लगाने में ग़लती की थी तथा यह समझते हुए कि अन्सार पर इनका प्रभाव हो गया है उसने यहां तक कह दिया कि हम मदीना में वापस पहुँच लें फिर जो अत्यन्त समादृत व्यक्ति है वह अत्यन्त तिरस्कृत व्यक्ति को बाहर निकाल देगा। अत्यन्त समादृत व्यक्ति से उसका अभिप्राय स्वयं वह था और अत्यन्त तिरस्कृत व्यक्ति से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (ऐसा कहने से हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं) उसके मुख से ज्यों ही यह बात निकली मोमिनों पर उसकी वास्तविकता प्रकट हो गई। उन्होंने कहा यह साधारण बात नहीं अपितु यह शैतान का कथन है जो हमें पथभ्रष्ट करने आया है। एक युवक उठा और उसने अपने चाचा के द्वारा यह सूचना हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) को पहुँचा दी। आप[स.] ने अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल और उसके साथियों को बुलाया और पूछा क्या बात हुई है? अब्दुल्लाह और उसके साथियों ने सरासर इन्कार कर दिया और कह दिया कि यह बात जो हम से सम्बद्ध की गई है हुई ही नहीं। आप[स.] ने कुछ न कहा, परन्तु सत्य बात का फैलना आरम्भ हो गया। कुछ समय के पश्चात् अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल के बेटे अब्दुल्लाह ने भी यह बात सुनी वह तुरन्त हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) की सेवा में उपस्थित हुआ और कहा हे अल्लाह के रसूल ! मेरे पिता ने आप[स.] का अपमान किया है, उसका दण्ड मृत्यु है। यदि आप यही निर्णय दें तो मैं चाहता हूँ कि आप[स.] मुझे आदेश दें कि मैं अपने पिता का वध करूँ। यदि आप[स.] किसी अन्य को आदेश देंगे और मेरा पिता उसके हाथों मारा जाएगा तो हो सकता है कि मैं उस व्यक्ति का वध करके अपने पिता का प्रतिशोध लूँ और इस प्रकार ख़ुदा तआला की अप्रसन्नता का कारण बनूं। परन्तु हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने फ़रमाया मेरा कदापि इरादा नहीं। मैं तुम्हारे पिता के साथ दया एवं सहानुभूति का व्यवहार करूँगा[1]। जब अब्दुल्लाह ने अपने पिता की बेवफ़ाई और उसके कटु शब्दों का मुहम्मद (स.अ.व.) की दयालुता और सहानुभूति से तुलना की तो उसका ईमान और बढ़ गया तथा अपने पिता के विरुद्ध उसका क्रोध भी इसी अनुपात से उन्नति कर गया। जब सेना नदी के निकट पहुँची तो उसने आगे बढ़कर अपने पिता का मार्ग रोक लिया और कहा कि मैं तुम्हें मदीना के अन्दर नहीं जाने दूँगा जब तक तुम वे शब्द वापस न ले लो जो तुम ने मुहम्मद (स.अ.व.) के विरुद्ध प्रयोग किए हैं। जिस मुख से यह बात निकली है कि ख़ुदा का नबी अपमानित है और तुम सम्मानित हो उसी मुख से तुम्हें यह बात भी कहना होगी कि ख़ुदा का नबी सम्मानित है और तुम अपमानित हो जब तक तुम यह न कहोगे, तब तक मैं तुम्हें आगे कदापि न जाने दूँगा। अब्दुल्लाह बिन उबय्य बिन सुलूल स्तब्ध रह गया तथा भयभीत हुआ और कहने लगा हे मेरे बेटे ! मैं तुम्हारी बात से सहमत हूँ। मुहम्मद (स.अ.व.) सम्मानित है और मैं अपमानित हूँ। नौजवान अब्दुल्लाह ने इस पर अपने पिता को छोड़ दिया[2]।

मदीना पर समस्त अरबों की चढ़ाई ख़न्दक का युद्ध

इस से पूर्व यहूदयों के दो क़बीलों का वर्णन किया जा चुका है। जो युद्ध, उपद्रव, उत्पात, हिंसा करने की योजनाओं के कारण मदीना से निकाल दिए गए थे, उनमें से बनू नज़ीर का कुछ भाग तो शाम की ओर पलायन कर गया था और कुछ भाग मदीना से उत्तर की ओर ख़ैबर नामक एक नगर की ओर पलायन कर गया था। ख़ैबर अरब में यहूदयों का एक बहुत बड़ा केन्द्र था और एक सुरक्षित दुर्ग के समान नगर था। बनू नज़ीर यहाँ पहुँच कर मुसलमानों के विरुद्ध अरबों को उत्तेजित करने लगा। मक्का निवासियों के हृदयों में पहले ही प्रतिहिंसा की ज्वाला धधक रही थी उसे और अधिक प्रज्वलित करने के लिए किसी अन्य उत्तेजना की आवश्यकता न थी। इसी प्रकार ग़त्फ़ान नामक नज्द का क़बीला जो अरब क़बीलों में बहुत बड़ी प्रतिष्ठा रखता था वह भी मक्का वालों की मित्रतावश इस्लाम की शत्रुता में अग्रसर रहता था। अब यहूद ने क़ुरैश और ग़त्फ़ान को उत्तेजित करने के अतिरिक्त बनू सलीम और बनू असद दो अन्य शक्तिशाली क़बीलों को भी मुसलमानों के विरुद्ध भड़काना आरम्भ कर दिया और इसी प्रकार बनू असद नामक कबीला जो यहूद का मित्र था उसे भी मक्का के काफ़िरों का साथ देने के लिए तैयार किया। एक लम्बी तैयारी के पश्चात् अरब के शक्तिशाली क़बीलों को मिलाकर एक सामान्य एकता की नींव रख दी गई जिसमें मक्का निवासियों के अतिरिक्त आस-पास के क़बीले तथा नज्द और मदीना से उत्तर की दिशा में आबाद क़बीले भी शामिल थे तथा यहूद भी शामिल थे। इन सभी कबीलों ने संगठित होकर मदीना पर आक्रमण करने के लिए एक विशाल सेना जुटा ली। यह शवाल माह, 5 हिज्री अन्तिम फरवरी-मार्च 627 ई.[1] की घटना है। विभिन्न इतिहासकारों ने इस सेना का अनुमान दस हज़ार से लेकर चौबीस हज़ार तक लगाया है परन्तु स्पष्ट है कि समस्त अरब के एकत्र हो जाने का परिणाम केवल दस हज़ार सैनिक नहीं हो सकता। निश्चय ही चौबीस हज़ार वाला अनुमान अधिक उचित है और यदि कुछ नहीं तो यह सेना अठारह-बीस हज़ार की संख्या में अवश्य रही होगी। मदीना एक साधारण क़स्बा था, इस क़स्बे के विरुद्ध समस्त अरब का आक्रमण कोई साधारण आक्रमण नहीं था। मदीने के पुरुष एकत्र करके (जिनमें वृद्ध, युवा और बच्चे भी सम्मिलित हों) मात्र तीन हज़ार लोग निकल सकते थे। इसके विपरीत शत्रु-सेना बीस और चौबीस हज़ार के लगभग थी। फिर वे सब फ़ौजी लोग थे, जवान और युद्ध के योग्य थे; क्योंकि जब शहर में रह कर सुरक्षा का प्रश्न खड़ा होता है तो उसमें बूढ़े और बच्चे भी सम्मिलित हो जाते हैं, परन्तु जब सुदूर स्थान पर सेना चढ़ाई करने जाती है तो उसमें केवल जवान और शक्तिशाली लोग होते हैं। अतः यह बात निश्चित है कि काफ़िरों की सेना में बीस या पच्चीस हज़ार जितने भी लोग थे वे सब के सब शक्तिशाली युवक और अनुभवी सैनिक थे परन्तु मदीना के

समस्त पुरुषों की संख्या बच्चों और विकलांगों को मिलाकर तीन हज़ार के लगभग थी। स्पष्ट है कि इन बातों को दृष्टिगत रखते हुए यदि मदीना की सेना की संख्या तीन हज़ार समझी जाए तो शत्रु की संख्या चालीस हज़ार मान लेना चाहिए और यदि शत्रु की सेना की संख्या बीस हज़ार समझी जाए तो मदीने की सेना की संख्या को केवल डेढ़ हज़ार समझना चाहिए। जब इस सेना के एकत्र होने की सूचना रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को पहुँची तो आपस. ने सहाबा को एकत्र करके परामर्श किया कि इस अवसर पर क्या करना चाहिए। सहाबारज़ि. में से सलमान फ़ारसीरज़ि. जो फ़ारस के सर्वप्रथम मुसलमान थे से पूछा कि तुम्हारे देश में ऐसे अवसर पर क्या करते हैं। उन्होंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! जब नगर असुरक्षित हो और सैनिक थोड़े हों तो हमारे देश के लोग ख़न्दक (खाई) खोदकर उसके अन्दर घेराबन्द हो जाया करते हैं। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने उनके इस प्रस्ताव को पसन्द किया। मदीना के एक ओर टीले थे दूसरी ओर ऐसे मुहल्ले थे जिन के मकान एक दूसरे से जुड़े हुए थे तथा शत्रु केवल कुछ गलियों में से गुज़र कर आ सकता था, तीसरी ओर कुछ मकान, कुछ बाग़ और कुछ दूरी पर यहूदी क़बीला बनू क़ुरैज़ा के क़िले थे। यह कबीला चूंकि मुसलमानों से एकता की संधि कर चुका था इसलिए यह दिशा भी सुरक्षित समझ ली गई थी, चौथी ओर खुला मैदान था जिसकी ओर से ख़तरा हो सकता था। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने निर्णय किया कि इस खुले मैदान की ओर खन्दक (खाई) बना दी जाए ताकि शत्रु अचानक शहर में प्रवेश न कर सके। अतः आपस. ने दस-दस गज़ का भाग दस-दस लोगों को खोदने के लिए दे दिया और इस प्रकार आपस. ने एक मील लम्बी खाई खुदवाई। जब खाई खोदी जा रही थी तो भूमि में एक ऐसा पत्थर निकला जो लोगों से किसी प्रकार से भी टूट नहीं रहा था। सहाबारज़ि. ने इस बात की सूचना रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को दी। अतः आपस. वहाँ स्वयं गए, अपने हाथ से कुदाल पकड़ा और ज़ोर से उस पत्थर पर मारा; कुदाल के पड़ने से उस पत्थर में से प्रकाश निकला, आपस. ने फ़रमाया अल्लाहो अकबर। फिर दोबारा आप ने कुदाल मारा तो फिर प्रकाश निकला, आप ने फिर फ़रमाया अल्लाहो अकबर। फिर आपस. ने तीसरी बार कुदाल मारा तो फिर प्रकाश निकला और साथ ही पत्थर टूट गया। इस अवसर पर पुनः आप ने फ़रमाया अल्लाहो अकबर। सहाबारज़ि. ने आप से पूछा हे अल्लाह के रसूल ! आप ने तीन बार अल्लाहो अकबर क्यों फ़रमाया? आपस. ने फ़रमाया पत्थर पर कुदाल पड़ने से तीन बार जो प्रकाश निकला, तीनों बार ख़ुदा ने मुझे इस्लाम की भावी उन्नति के दृश्य दिखाए। पहली बार के प्रकाश में क़ैसर के शासन के अधीन शाम के महल दिखाए गए तथा उनकी कुंजियां मुझे दी गईं। दूसरी बार के प्रकाश में मुझे मदायन के श्वेत महल दिखाए गए तथा फ़ारस के शासन की कुंजियां मुझे दी गईं, तीसरी बार के प्रकाश में मुझे सनआ के दरवाज़े दिखाए गए, यमन के राज्य की मुझे कुंजियां दी गईं। अतः तुम ख़ुदा तआला के वादों पर विश्वास रखो, शत्रु तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता[1]। ये थोड़े से लोग फ़ौजी नियमों के अनुसार इतनी लम्बी ख़न्दक तो नहीं खोद सकते थे अतः यह ख़न्दक इतना ही लाभ दे सकती थी कि शत्रु अचानक अन्दर न घुस सके अन्यथा शत्रु के लिए इस ख़न्दक़ से पार होना असंभव नहीं था। अतः अब जो घटनाएँ वर्णन होंगी उन से ऐसा ही सिद्ध होता है। शत्रु ने भी मदीना की परिस्थितियों को दृष्टि में रख कर इसी ओर से आक्रमण करने की योजना बनाई हुई थी। अतः शत्रु की विशाल सेना इसी ओर से मदीने में प्रवेश करने कि लिए आगे बढ़ी। रसूले करीम (स.अ.व.) को इसकी सूचना मिली तो आपने भी कुछ लोगों को शहर के अन्य भागों की सुरक्षा के लिए नियुक्त कर दिया तथा शेष लोगों को साथ लेकर जो बारह सौ के लगभग थे ख़न्दक की सुरक्षा के लिए गए।

ख़न्दक के युद्ध के समय इस्लामी सेना की वास्तविक संख्या?

यहां सेना की संख्या के बारे में इतिहासकारों में अत्यधिक मतभेद हैं। कुछ लोगों ने इस सेना की संख्या तीन हज़ार लिखी है, कुछ ने बारह-तेरह सौ और कुछ ने सात-सौ। यह इतना बड़ा मतभेद है कि जिसकी व्याख्या प्रायः कठिन मालूम होती है तथा इतिहासकार इसे हल नहीं कर सके परन्तु मैंने इस की वास्तविकता को पा लिया है और वह यह कि तीनों प्रकार की रिवायतें सही हैं। यह बताया जा चुका है कि उहद के युद्ध में मुनाफ़िक लोगों के वापस आ जाने के पश्चात् मुसलमानों की सेना केवल सात सौ सदस्यों पर आधारित थी। अहज़ाब का युद्ध इसके दो वर्ष पश्चात् हुआ है तथा इस अवधि में कोई बड़ा क़बीला इस्लाम को स्वीकार करके मदीने में आकर आबाद नहीं हुआ। अतः सात सौ लोगों का सहसा तीन हज़ार हो जाना अनुमान के विपरीत है। दूसरी ओर यह बात भी युक्ति संगत नहीं कि उहद के दो वर्ष पश्चात् तक इस्लाम की उन्नति के बावजूद युद्ध करने के योग्य मुसलमान इतने ही रहे जितने उहद युद्ध के समय थे। अतः इन दोनों समीक्षाओं के बाद वह रिवायत ही उचित मालूम होती है कि लड़ने के योग्य मुसलमान अहज़ाब युद्ध के समय बारह सौ थे। अब रहा यह प्रश्न कि फिर किसी ने तीन हज़ार और किसी ने सात सौ क्यों लिखा है, तो इसका उत्तर यह है कि ये दो रिवायतें (वर्णन) पृथक-पृथक परिस्थितियों और दृष्टिकोणों के अन्तरगत वर्णन की गई हैं। अहज़ाब युद्ध के तीन भाग थे। एक भाग वह था जब अभी शत्रु मदीने के सामने नहीं आया था और खाई (ख़न्दक़) खोदी जा रही थी। इस कार्य में मिट्टी ढोने का कार्य कम से कम बच्चे भी कर सकते थे और कुछ स्त्रियाँ भी इस कार्य में सहयोग दे सकती थीं। अतः जब तक खाई खोदने का कार्य जारी रहा, मुसलमान सेना की संख्या तीन हज़ार थी, परन्तु इस में बच्चे भी सम्मिलित थे तथा सहाबी स्त्रियों की तेजस्वी भावना देख कर हम कह सकते हैं कि इस संख्या में कुछ स्त्रियाँ भी सम्मिलित रही होंगी जो खाई खोदने का कार्य तो नहीं करती होंगी, परन्तु अतिरिक्त कार्यों में भाग लेती होंगी। यह मेरा विचार ही नहीं, इतिहास से भी इस विचार की पुष्टि होती है। अतः लिखा है कि जब खाई खोदने का समय आया सब लड़के एकत्र कर लिए गए तथा सभी पुरुष चाहे वे बड़े थे या बच्चे; खाई खोदने अथवा उसमें सहायता देने का कार्य करते थे। फिर जब शत्रु आ गया और युद्ध आरम्भ हुआ तो रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने उन समस्त लड़कों को जो पन्द्रह वर्ष के थे उन्हें अनुमति दी कि चाहे ठहरें चाहे चले जाएँ।[1]

इस रिवायत से विदित होता है कि खाई खोदते समय मुसलमानों की संख्या अधिक थी तथा युद्ध के समय कम हो गई क्योंकि अवयस्कों को वापस चले जाने का आदेश दे दिया गया था। अतः जिन रिवायतों में तीन हज़ार की चर्चा है वह खाई खोदने के समय की संख्या बताती हैं जिसमें छोटे बच्चे भी सम्मिलित थे तथा जैसा कि मैंने अन्य युद्धों को देखते हुए अनुमान द्वारा जो परिणाम निकाला है कुछ स्त्रियाँ भी थीं परन्तु बारह सौ की संख्या उस समय की है जब युद्ध प्रारम्भ हो गया और केवल वयस्क पुरुष रह गए। अब रहा यह प्रश्न कि तीसरी रिवायत जो सात सौ सिपाही बताती है क्या वह भी उचित है?

इस का उत्तर यह है कि यह रिवायत इतिहासकार इब्ने इस्हाक़ ने लिखी है जो विश्वसनीय इतिहासकार है तथा इब्ने हज़्म जैसे प्रकाण्ड विद्वान ने उस की भरपूर पुष्टि की है। अतः इसके संबंध में भी सन्देह नहीं किया जा सकता तथा उसकी पुष्टि इस प्रकार भी होती है कि इतिहास की गहरी छान-बीन से विदित होता है कि जब युद्ध के समय बनू क़ुरैज़ा काफ़िरों की सेना में जा मिले तथा उन्होंने यह इरादा किया कि मदीना पर अचानक आक्रमण कर दे परन्तु उनकी दूषित भावनाओं का रहस्य प्रकट हो गया तो मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने मदीना की उस ओर की सुरक्षा आवश्यक समझी जिस ओर बनू क़ुरैज़ा थे तथा जिस ओर इस विचार के अनुसार सुरक्षा की उपेक्षा की गई थी कि बनू क़रैज़ा हमारे साथी हैं। ये लोग शत्रु को उस ओर से न आने देंगे। अतः इतिहास द्वारा ज्ञात होता है कि जब बनू क़ुरैज़ा के द्रोह का पता लगा, तो चूंकि बनू क़ुरैज़ा के विश्वास पर स्त्रियाँ उस क्षेत्र में रखी गई थीं। जिस ओर बनू क़रैज़ा के क़िले थे और असुरक्षित थीं; रसूले करीम (स.अ.व.) ने अब उनकी सुरक्षा आवश्यक समझी तथा मुसलमानों के दो सैन्य दल तैयार करके स्त्रियों के ठहरने के दोनों भागों पर नियुक्त कर दिए। मुस्लिमा बिन असलमरज़ि. को दो सौ सहाबा देकर एक स्थान पर नियुक्त किया और ज़ैद बिन हारिसरज़ि. को तीन सौ सहाबा देकर दूसरे स्थान पर नियुक्त किया तथा आदेश दिया कि थोड़े-थोड़े समय पर उच्च स्वर में अल्लाहो अकबर का उदघोष करते रहें ताकि ज्ञात होता रहे कि स्त्रियाँ सुरक्षित हैं। इस रिवायत से हमारी यह कठिनाई कि इब्ने इस्हाक़ ने सात सौ सैनिक ख़न्दक़ युद्ध में क्यों बताए हैं हल हो जाती है क्योंकि बारह सौ सैनिकों में से जब पाँच सौ सिपाही स्त्रियों की सुरक्षा के लिए भेज दिए गए तो बारह सौ की सेना मात्र सात सौ रह गई तथा इस प्रकार ख़न्दक़ युद्ध के सैनिकों की संख्या के बारे में इतिहासों में बहुत मतभेद पाया जाता है उसका निवारण हो गया।

सारांश यह कि इस महान संकट के समय ख़न्दक़ की सुरक्षा के लिए रसूले करीम (स.अ.व.) के पास केवल सात सौ लोग थे। इस में कोई सन्देह नहीं कि आप सने ख़न्दक खोदी थी परन्तु फिर भी इतनी बड़ी सेना के ख़न्दक़ के पार से रोकना भी इतने कम लोगों के लिए असंभव था परन्तु ख़ुदा तआला की अलौकिक सहायता के सहारे यह मुट्ठी भर सेना ईमान और विश्वास के साथ ख़न्दक़ के पीछे शत्रु की विशाल सेना की प्रतीक्षा करने लगी और स्त्रियाँ तथा बच्चे दो अलग-अलग स्थानों पर एकत्र कर दिए गए। शत्रु जब ख़न्दक़ तक पहुँचा तो चूंकि यह अरबों के लिए बिल्कुल नई बात थी और वे इस प्रकार के युद्ध के लिए तैयार न थे। उन्होंने ख़न्दक़ के सामने अपने शिविर लगा दिए और मदीने में प्रवेश करने के लिए उपाय सोचने लगे।

शेष . . .

पृष्ठ 12 का शेष

नौजवान थे, आपने अपने तब्लीग़ी काम के बारे में एक स्वप्न देखा था। फिर उन्हीं दिनों, जब आप सियालकोट में नौकरी कर रहे थे, उस समय के बारे में भी पक्का प्रमाण मौजूद है कि आपने तब्लीग़ और शिक्षा का काम शुरू कर दिया था। दूसरे धर्मों के लोगों के साथ आपकी ज़बानी बहसें भी होती रहती थीं। लेकिन यह सब केवल निजी स्तर पर था।

आपने आम लोगों के सामने आना और लेख प्रकाशित करना बराहीन-ए-अहमदिया की रचना से कुछ ही पहले, अर्थात् 1877-78 ई. में शुरू किया। आपने तब्लीग़ी ख़तों का दायरा भी बढ़ाया। लेकिन वास्तव में बराहीन-ए-अहमदिया के प्रकाशन के विज्ञापन ने ही सबसे पहले आपको पूरे देश के सामने प्रस्तुत किया। इस तरह ज्ञान से प्रेम करने वाले और धार्मिक मामलों में रुचि रखने वाले लोगों के बीच आपका परिचय हुआ। लोगों की नज़रें इस गाँव में रहने वाले गुमनाम व्यक्ति की ओर हैरानी से उठने लगीं, जिसने इस चुनौती और इतने बड़े इनाम के वादे के साथ इस्लाम की सच्चाई के बारे में एक महान पुस्तक लिखने की घोषणा की थी।

अब मानो मार्गदर्शन का वह सूर्य, जो निस्संदेह इससे पहले ही उदय हो चुका था, क्षितिज से ऊपर उठने लगा। इसके बाद बराहीन-ए-अहमदिया के प्रकाशन ने देश के धार्मिक वर्गों में असाधारण हलचल पैदा कर दी। आम तौर पर मुसलमानों ने बराहीन-ए-अहमदिया के लेखक का एक महान मुजद्दिद के रूप में स्वागत किया। वहीं इस्लाम के विरोधियों के खेमे में भी इस जवाबी प्रहार से हलचल मच गई। ख़ुद लेखक के लिए भी बराहीन-ए-अहमदिया लिखने का समय एक जैसा नहीं गुज़रा। शुरुआत में वे इस्लाम के एक सामान्य सेवक के रूप में उठे थे, लेकिन पुस्तक लिखने के दौरान अल्लाह तआला के विशेष प्रकाश के ऐसे नज़ारे सामने आए, जिन्होंने उन्हें हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की तरह एक नई स्थिति तक पहुँचा दिया। बराहीन-ए-अहमदिया की रचना पूरी होने से पहले ही वे किसी सामान्य सैनिक की तरह नहीं, बल्कि संसार के सम्राट की ओर से नियुक्त सेनापति की तरह युद्ध के मैदान में यह पुकार लगाने लगे थे कि "है कोई मुकाबले के लिए आने वाला?" संक्षेप में, बराहीन-ए-अहमदिया की रचना ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देश के उन लोगों के बीच बहुत प्रमुख स्थान दिला दिया था, जो ज्ञान से प्रेम करते थे और धार्मिक मामलों में रुचि रखते थे। आपके विशेष अनुयायियों का एक समूह भी बन गया था। क़ादियान का वह गुमनाम गाँव, जो रेल और सड़क से दूर, एक पर्दे के पीछे छिपा हुआ था, अब कभी-कभी बाहर से आने वाले मेहमानों का केंद्र बनने लगा था। इस्लाम के विरोधी भी अपने मुँह से फूँक मारकर इस प्रकाश को बुझाने के लिए उठ खड़े हुए थे।

बराहीन-ए-अहमदिया के प्रकाशन के बाद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बीस हज़ार उर्दू और अंग्रेज़ी विज्ञापनों के माध्यम से दुनिया के सभी देशों में अपनी मामूरियत अर्थात् अल्लाह की ओर से नियुक्त किए जाने की घोषणा की।

इसके बाद, 1886 ई. की शुरुआत में, जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह के आदेश के अनुसार होशियारपुर गए और वहाँ चालीस दिनों तक एकांत में रहकर अल्लाह के ज़िक्र में व्यस्त रहे, तो अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल से आपको एक महान पुत्र की ख़ुशख़बरी दी। इस पुत्र ने अपने मसीही स्वभाव के साथ संसार का सुधारक बनकर दुनिया के चारों कोनों में प्रसिद्धि प्राप्त करनी थी।

यह इल्हाम इतनी शान और रौब के साथ हुआ कि जब हुज़ूर ने 20 फ़रवरी 1886 ई. के विज्ञापन में इसकी घोषणा की तो देश में हलचल मच गई। लोग बहुत उत्सुकता से उस वादा किए गए पुत्र की प्रतीक्षा करने लगे और सभी ने अपनी-अपनी सोच के अनुसार उस पुत्र से उम्मीदें लगा लीं।

कुछ लोगों ने उस वादा किए गए पुत्र को महदी मौऊद समझा, जिसके आने का वादा इस्लाम में किया गया था और जिसने दुनिया में आकर इस्लाम के दुश्मनों को समाप्त करना था तथा हर क्षेत्र में मुसलमानों को विजय दिलानी थी। कुछ लोगों ने इसी प्रकार की दूसरी उम्मीदें लगा लीं। कुछ लोग केवल तमाशबीन बनकर इस भविष्यवाणी की शान और रौब देखकर हैरान थे। उन्होंने कोई विशेष उम्मीद लगाए बिना यह देखने के लिए इंतज़ार किया कि पर्दे के पीछे से क्या प्रकट होता है। दूसरे धर्मों के लोग भी इस ख़बर से चौंक गए थे। इस प्रकार इस इल्हाम के प्रचार से आम लोगों का ध्यान आपकी ओर आकर्षित हुआ।

उन दिनों हुज़ूर के घर में बच्चे का जन्म होने वाला था, लेकिन अल्लाह की ओर से ईमान की राह में आज़माइशें भी आती हैं। अल्लाह की क़ुदरत का मामला ऐसा हुआ कि कुछ महीनों बाद, अर्थात् मई 1886 ई. में, जब बच्चा पैदा हुआ तो वह लड़की थी। इस पर अच्छी नीयत रखने वाले लोगों में निराशा फैल गई और बुरी नीयत रखने वालों तथा दुश्मनों में हँसी-मज़ाक और उपहास की ऐसी लहर उठी, जिसने देश में हलचल मचा दी।

उस समय तक बैअत का सिलसिला शुरू नहीं हुआ था कि अनुयायी अलग दिखाई देते। बस आम लोगों में तरह-तरह की बातें हो रही थीं। कोई कुछ कहता था तो कोई कुछ। हुज़ूर ने विज्ञापनों और ख़तों के माध्यम से घोषणा की कि इल्हाम में यह नहीं बताया गया था कि उस समय जिस बच्चे की उम्मीद की जा रही है, वही वादा किया गया पुत्र होगा। इस तरह आपने लोगों को संतुष्ट करने की कोशिश की। परिणामस्वरूप अधिकतर लोग फिर संभल गए और भविष्यवाणी के पूरा होने की प्रतीक्षा करने लगे।

कुछ समय बाद, अर्थात् अगस्त 1887 ई. में, हज़रत के घर एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम बशीर अहमद रखा गया। इस लड़के के जन्म पर बहुत ख़ुशी मनाई गई। कई लोग, जो पहले डगमगा गए थे, फिर संभल गए। लोगों ने समझा कि यही वह वादा किया गया लड़का है और खुद हज़रत साहिब का भी यही विचार था। यद्यपि आपने इसके बारे में कभी पूरी तरह निश्चित होने की बात नहीं कही, लेकिन आप यह ज़रूर फ़रमाते रहे कि परिस्थितियों से ऐसा ही मालूम होता है कि यही वह लड़का है। वल्लाहु आलम अर्थात् अल्लाह ही बेहतर जानता है।

इस प्रकार पहले बशीर के जन्म से आम लोगों का ध्यान फिर

★ ★ ★

अख़बार बदर खुद भी पढ़ें और अपने मित्रों व परिचितों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

हमारे मार्गदर्शक हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने अख़बार बदर के दिसंबर 2014 के विशेषांक के लिए अपना संदेश भेजते हुए फ़रमाया:

"अख़बार बदर के प्रबंधन और पाठकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इस अख़बार का प्रकाशन जमाअत के सदस्यों की आध्यात्मिक सुधार और प्रगति के लिए किया गया था। हमारे बुजुर्गों ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, पूर्ण लगन के साथ इसे निरंतर जारी रखने का प्रयास किया और उनकी प्रार्थनाओं पवित्र प्रयासों के आशीर्वाद से ही यह आज तक प्रकाशित हो रहा है। यह बात इस मांग को जन्म देती है कि अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाएं। अल्लाह तआला अपनी कृपा से भारत के अहमदियों को विशेष रूप से और दुनिया भर में रहने वाले अहमदियों को सामान्य रूप से, इसके अध्ययन और इससे जुड़े आशीर्वादों को प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक उपदेश को ध्यान में रखते हुए, अहमदिया जमाअत के सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक घर में अख़बार बदर के अध्ययन को सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। अख़बार बदर में कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उच्च वचनों के अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमअः के उपदेश, भाषणों, साथ ही साथ हज़ूर अनवर के विभिन्न देशों की पवित्र यात्राओं की अत्यंत रोचक और ईमान बढ़ाने वाली रिपोर्टें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला की कृपा और हमारे मार्गदर्शक हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दया से अब यह अख़बार उर्दू के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी साथियों ने अभी तक अख़बार बदर अपने नाम से जारी नहीं करवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर अपने नाम से जारी करवाकर स्वयं भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को भी इसे पढ़ने का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हमारे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों पर, उनकी वास्तविक भावना के अनुसार, पूर्ण रूप से अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

अख़बार बदर के समय पर न पहुंचने, चंदे की अदायगी, या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया कार्यालय प्रबंधक, साप्ताहिक अख़बार बदर से संपर्क करें।

(प्रबंधन)

★ ★ ★

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
akhbaarbadarhindiqdn@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 15 October 2026 Issue No. 42

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

112 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सनौरी ने बयान किया कि एक बार हज़रत साहिब बड़ी मस्जिद में टहल रहे थे। मैं एक कोने में बैठकर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने लगा। उस समय मस्जिद में कोई और व्यक्ति नहीं था। हज़रत टहलते-टहलते एक बार रुके और मेरी ओर देखा। उसी समय मैंने भी आपकी ओर देखा। जब मेरी और हज़रत की नज़रें मिलीं तो पता नहीं उस समय आपकी नज़र में क्या था कि मेरा दिल मेरे सीने के अंदर पिघल गया। मैंने दुआ के लिए हाथ उठा लिए और बहुत देर तक दुआ करता रहा। हज़रत टहलते रहे। फिर आख़िर में हज़रत ने ही मुझसे फ़रमाया, "मियाँ अब्दुल्लाह! बहुत दुआ हो चुकी, अब बंद करो।" मियाँ अब्दुल्लाह साहिब कहते थे कि उस दिन मैंने समझा कि यह जो कहा जाता है कि कभी-कभी किसी कामिल व्यक्ति की एक नज़र इंसान को क्या से क्या बना देती है, इसका क्या अर्थ है। मियाँ अब्दुल्लाह साहिब कहते थे कि जब हज़रत का प्यार और स्नेह याद आता है तो मेरी जान पिघलने लगती है।

113 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सनौरी ने बयान किया कि मैं शुरू में बहुत हुक़्क़ा पिया करता था। शेख़ हामिद अली भी हुक़्क़ा पीते थे। एक दिन शेख़ हामिद अली ने हज़रत साहिब से ज़िक्र कर दिया कि यह बहुत हुक़्क़ा पीते हैं। इसके बाद जब मैं सुबह के समय हज़रत साहिब के पास गया और आपके पैर दबाने बैठा तो आपने शेख़ हामिद अली से कहा कि कोई हुक़्क़ा अच्छी तरह ताज़ा करके लाओ। जब शेख़ हामिद अली हुक़्क़ा ले आए तो हज़रत ने मुझसे फ़रमाया कि पियो। मैं शर्मिंदा हुआ, मगर हज़रत साहिब ने फ़रमाया, "जब तुम पीते हो तो शर्म की क्या बात है? पियो, कोई हर्ज नहीं।" मैंने बड़ी मुश्किल से रुक-रुककर एक घूँट पिया। फिर हज़रत ने फ़रमाया, "मियाँ अब्दुल्लाह! मुझे इससे स्वाभाविक रूप से नफ़रत है।"

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब कहते थे कि बस, मैंने उसी समय से हुक़्क़ा छोड़ दिया और हज़रत के इस फ़रमान के साथ ही मेरे दिल में भी उससे नफ़रत पैदा हो गई। फिर एक बार मेरे मसूड़ों में तकलीफ़ हुई तो मैंने हज़रत से अर्ज़ किया कि जब मैं हुक़्क़ा पीता था तो यह दर्द दूर हो जाता था। हज़रत ने जवाब दिया कि "बीमारी के लिए हुक़्क़ा पीना मजबूरी में शामिल है और जायज़ है, जब तक मजबूरी बनी रहे।"

इसलिए मैंने थोड़ी देर तक दवा के तौर पर इसका इस्तेमाल किया और फिर छोड़ दिया। मियाँ अब्दुल्लाह साहिब बयान करते हैं कि हज़रत के घर में हुक़्क़े का इस्तेमाल होता था। एक बार हज़रत ने मुझे घर में हुक़्क़े का एक टूटा हुआ हिस्सा कील पर लटका हुआ दिखाया और मुस्कराकर फ़रमाया, "हमने इसे तोड़कर फाँसी पर लटका दिया है।" यह बंदा अर्ज़ करता है कि घर में शायद कोई महिला हुक़्क़े का इस्तेमाल करती होगी।

114 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे मियाँ अब्दुल्लाह साहिब सनौरी ने बयान किया कि एक बार हज़रत साहिब क़ादियान के उत्तरी हिस्से की ओर सैर के लिए तशरीफ़ ले गए। मैं और शेख़ हामिद अली भी साथ थे। रास्ते के किनारे एक खेत के पास बेर का एक छोटा-सा पेड़ था, जिस पर बेर लगे हुए थे। एक बहुत अच्छा, पका हुआ लाल बेर रास्ते में गिरा हुआ था। मैंने चलते-चलते उसे उठा लिया और खाने लगा। हज़रत साहिब ने फ़रमाया, "इसे मत खाओ और वहीं रख दो। आख़िर यह किसी की मिल्कियत है।"

मियाँ अब्दुल्लाह साहिब कहते हैं कि उस दिन से लेकर आज तक मैंने किसी बेर के पेड़ से उसके मालिक की इजाज़त के बिना बेर नहीं खाए, क्योंकि जब भी मैं किसी बेर के पेड़ की ओर देखता हूँ तो मुझे यह बात याद आ जाती है। यह बंदा अर्ज़ करता है कि इस देश में बेर के पेड़ आम तौर पर अपने आप उग आते हैं और उनके फलों की कोई परवाह नहीं की जाती।

115 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

मुझसे मौलवी सैयद मुहम्मद सरवर शाह साहिब ने बयान किया कि एक बार हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल के पास किसी का ख़त आया, जिसमें पूछा गया था कि क्या नमाज़ में नाभि से ऊपर हाथ बाँधने के बारे में कोई सही हदीस भी मिलती है?

हज़रत मौलवी साहिब ने यह ख़त हज़रत साहिब के सामने पेश किया और अर्ज़ किया कि इस बारे में जो हदीसें मिलती हैं, वे आलोचना से मुक्त नहीं हैं। हज़रत साहिब ने फ़रमाया, "मौलवी साहिब! आप तलाश करें, ज़रूर मिल जाएगी। क्योंकि इसके बावजूद कि जीवन के शुरुआती समय में भी हमारे आसपास सब हनफ़ी थे, मुझे नाभि के नीचे हाथ बाँधना कभी पसंद नहीं आया। बल्कि हमेशा मेरा स्वाभाविक झुकाव नाभि से ऊपर हाथ बाँधने की ओर रहा है। हमने कई बार अनुभव किया है कि जिस बात की ओर हमारी स्वाभाविक रुचि होती है, तलाश करने पर वह हदीस में ज़रूर मिल जाती है, चाहे हमें पहले उसका ज्ञान न हो। इसलिए आप तलाश करें, ज़रूर मिल जाएगी।"

मौलवी सरवर शाह साहिब बयान करते हैं कि इसके बाद हज़रत मौलवी साहिब वहाँ से गए और अभी आधा घंटा भी नहीं गुज़रा था कि वे ख़ुशी-ख़ुशी हाथ में एक किताब लिए वापस आए और हज़रत साहिब को बताया कि हुज़ूर! हदीस मिल गई है। और हदीस भी ऐसी है जो शैख़ैन की शर्तों के अनुसार सही है, जिस पर कोई आलोचना नहीं है। फिर उन्होंने कहा कि यह हुज़ूर के फ़रमान की बरकत है।

116 बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम।

यह बंदा अर्ज़ करता है कि यद्यपि बराहीन-ए-अहमदिया की रचना और उससे संबंधित सामग्री इकट्ठा करने का काम पहले से हो रहा था, लेकिन बराहीन-ए-अहमदिया की वास्तविक रचना और उसके प्रकाशन की योजना 1879 ई. से शुरू हुई और उसका अंतिम भाग अर्थात् चौथा भाग 1884 ई. में प्रकाशित हुआ।

बराहीन-ए-अहमदिया की रचना से पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम गुमनामी की ज़िंदगी गुज़ार रहे थे और एकांत में फ़क़ीरों जैसी हालत में रहते थे। यद्यपि बराहीन-ए-अहमदिया से पहले आपने कुछ अख़बारों में लेख प्रकाशित करने का सिलसिला शुरू कर दिया था और इस प्रकार के विज्ञापनों के कारण आम लोगों में भी आपका नाम कुछ हद तक पहुँच गया था, लेकिन बहुत कम। हाँ, आपके परिचितों के बीच आपकी तब्लीग़ और शिक्षा का दायरा युवावस्था से ही दिखाई देने लगता है।

उदाहरण के तौर पर, 1864-65 ई. में, जब आप अभी बिल्कुल

शेष पृष्ठ 11 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad